33 सत्य की ओर खिड़कियां

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

33

विंडोज़

सत्य की ओर

* तैंतीसवाँ वचन

बेदिउज्जमां
नर्स ने कहा

TUGHRA
BOOKS
न्यू जर्सी

12 11 10 09 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

हुसेन अकारसु द्वारा तुर्की से अनुवादित

आईएसबीएन: 978-1-59784-221-1

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

ब्रह्मांड और मानवता से ईश्वर के अस्तित्व और एकता पर खुलने वाली तैंतीस खिड़कियाँ

[शब्दों से, तैंतीसवाँ शब्द]

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज़्ज़मान उस दौर में रहते थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज़्ज़मान ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का प्रयोग युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, तथा शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग इनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें क्रूरतम उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदिउज्जमां ने सम्पूर्ण लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के संस्थानों में जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे फूंक दिया।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि पहले की तरह अज्ञानता से। उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।

संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और इस्लाम की सच्चाई को हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने पेश करने की कोशिश की। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी है, जो मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

तैंतीस खिड़कियाँ खुल रही हैं
ईश्वर का अस्तित्व और एकता
ब्रह्मांड और मानवता

[शब्दों से, तैंतीसवाँ शब्द]

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हम उन्हें अपनी निशानियाँ ब्रह्माण्ड के क्षितिज में तथा उनके स्वयं के भीतर दिखा देंगे, यहाँ तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि यह सत्य है। क्या यह पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर साक्षी है? (41:53)

प्रश्न: हम एक संक्षिप्त, संक्षिप्त व्याख्या चाहते हैं कि किस प्रकार मानवता (सूक्ष्म जगत) और ब्रह्माण्ड (स्थूल जगत) ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की ओर संकेत करते हैं, साथ ही साथ उनके प्रभुत्व के आवश्यक गुणों और विशेषताओं की ओर भी, जिन्हें उपरोक्त व्यापक श्लोक के दो भाग दर्शाते हैं।

उत्तर: अब तक लिखे गए बत्तीस शब्द उस श्लोक द्वारा बहाए गए सत्य के सागर से बत्तीस बूँदें हैं। आपके प्रश्न का उत्तर इसमें है। निम्नलिखित केवल उस सागर से एक बूँद की ओर इशारा करता है।

यदि कोई चमत्कार दिखाने वाला व्यक्ति बड़ा महल बनाना चाहता है, तो सबसे पहले वह नींव को मजबूती से रखता है-

इसके निर्माण के उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह महल को कुशलतापूर्वक अपार्टमेंट और कमरों में विभाजित करता है और फिर उन्हें सुसज्जित और सजाता है। उसके बाद, वह महल को बिजली की रोशनी से जगमगाता है। वह हर विंग और अपार्टमेंट में अतिरिक्त निर्माण, परिवर्तन और रूपांतरण करके अपने अन्य कौशल और हमेशा नवीनीकृत उदारता को दर्शाता है। वह हर अपार्टमेंट और कमरे को जोड़ने वाली एक संचार प्रणाली स्थापित करता है, और हर कमरे में खिड़कियाँ खोलता है ताकि उसका पद और असली पहचान प्रदर्शित हो सके और महल के निवासी उससे संपर्क कर सकें।

इसी तरह - ईश्वर की तुलना सबसे उत्कृष्ट है - महिमा के निर्माता, उत्पत्तिकर्ता, जो तुलना से परे हैं और जिन्हें १,००१ पवित्र नामों से पुकारा जाता है, जैसे कि सर्वज्ञ शासक और सर्व-न्यायप्रिय न्यायाधीश, ने ब्रह्मांड के उस महल, सृष्टि के उस वृक्ष को बनाने की इच्छा की, जो स्थूल जगत है। उन्होंने महल (और वृक्ष) की नींव छह "दिनों" में रखी और अपनी बुद्धि के सिद्धांतों और अपने शाश्वत ज्ञान के नियमों के साथ मुख्य निकाय का निर्माण किया। इसे उच्च और निम्न स्तरों और शाखाओं में विभाजित करते हुए, उन्होंने इसे अपने आदेश और नियति के सिद्धांतों के साथ विस्तृत और विस्तृत किया। फिर उन्होंने जीवों को समूहों, परिवारों और प्रजातियों में बनाया और व्यवस्थित किया और अपनी कला और अनुग्रह के सिद्धांतों के साथ प्रत्येक के जीवन को व्यवस्थित किया। उसके बाद, उन्होंने प्रत्येक चीज़ और क्षेत्र को एक अनोखे तरीके से सजाया। उदाहरण के लिए, उन्होंने आकाश को सितारों से और पृथ्वी को प्रवाह से सजाया-

उन्होंने उन विशाल क्षेत्रों में अपने नाम प्रकट किए

जहाँ उनके सार्वभौमिक नियम और सर्व-समावेशी सिद्धांत लागू हैं और उन्हें प्रकाशित करते हैं। उसके बाद, अपने नामों को प्रकट करके, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय, वे प्रत्येक व्यक्तिगत प्राणी की सहायता के लिए आए जो उन सार्वभौमिक नियमों के दबाव में रोया। इसका मतलब है कि उनके सार्वभौमिक और सर्व-समावेशी नियमों के भीतर, उनके पास विशेष अनुग्रह और सहायता है, साथ ही विशेष अभिव्यक्तियाँ हैं, जो हर प्राणी को किसी भी समय उनकी ओर मुड़ने और उनसे अपनी किसी भी ज़रूरत को पूरा करने के लिए कहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। साथ ही, अपने अस्तित्व और एकता को स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने सभी अपार्टमेंट, सृष्टि और दुनिया के सभी स्तरों, अस्तित्व और व्यक्तियों के सभी समूहों और सभी चीज़ों से खुद पर खिड़कियाँ खोलीं।

इसके अलावा, उन्होंने हर दिल में एक फोन छोड़ दिया।

अब हम उन असंख्य खिड़कियों का उल्लेख करते हैं जो सर्वव्यापक ईश्वरीय ज्ञान की ओर ले जाती हैं, जिनकी चर्चा करना हमारी क्षमता से परे है, प्रत्येक निर्धारित प्रार्थना के बाद ईश्वर की महिमा और स्तुति तथा उसकी महानता की पुष्टि करने वाले वाक्यों के तैंतीस दोहरावों के साथ, तथा तैंतीसवें शब्द के शीर्षक के अंतर्गत, हम कुरान की आयतों से उत्पन्न उनमें से तैंतीस के संक्षिप्त उल्लेख से संतुष्ट होंगे।

तैंतीस खिड़कियाँ

पहली खिड़की

हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि सभी चीज़ों, विशेष रूप से जीवित चीज़ों की कई अलग-अलग ज़रूरतें और मांगें होती हैं। वे किसी अज्ञात और अप्रत्याशित स्थान से समय पर पूरी हो जाती हैं। अपनी वस्तुओं तक खुद नहीं पहुँच पाने के कारण वे अपनी छोटी-सी ज़रूरत भी पूरी नहीं कर पाते।

उदाहरण के लिए, अपने बारे में सोचें: विचार करें कि आपकी बाहरी और बाहरी इंद्रियों और अंगों को संतुष्ट करने के लिए आपको कितनी ज़रूरतें हैं, जिन्हें आप प्राप्त करने में असमर्थ हैं। इस तुलना को अन्य सभी जीवित प्राणियों पर लागू करें। ये ज़रूरतें और मांगें, साथ ही उनकी संतुष्टि, अकेले और समग्र रूप से अदृश्य के पर्दे के पीछे एक बिल्कुल ज़रूरी प्राणी के अस्तित्व और उसकी एकता की ओर इशारा करती हैं। जैसे सूर्य की रोशनी सूर्य की ओर इशारा करती है, वे उसे उसके नामों के साथ मन को दिखाते हैं जो सर्व-मुनि हैं-

वह सर्वशक्तिमान, दयालु, प्रशिक्षक और पालनकर्ता, तथा प्रदाता और आयोजक है। आप इस सार्वभौमिक वास्तविकता को कैसे समझा सकते हैं जो ज्ञान, जागरूकता और करुणा प्रदर्शित करती है? क्या आप इसे बहरे स्वभाव, अंधी शक्ति, यादृच्छिक संयोग या निर्जीव और शक्तिहीन कारणों के कारण बताकर समझा सकते हैं?

दूसरी खिड़की

अस्तित्व और वैयक्तिकरण के मार्ग पर वस्तुओं और प्राणियों के पास अनंत प्रकार के संभावित रूप होते हैं, लेकिन प्रत्येक को एक साथ और पूर्ण बुद्धि के साथ, बाहरी और आंतरिक इंद्रियों से सुसज्जित एक विशेष, अलग और अत्यंत सुव्यवस्थित चेहरा दिया जाता है। यह चेहरा एक अद्वितीय चिह्न धारण करता है जो व्यक्ति को उसकी प्रजाति के अन्य सभी सदस्यों से अलग करता है। इस प्रकार किसी का चेहरा दिव्य एकता की एक बहुत ही शानदार मुहर है जो विशेष रूप से उसके उद्देश्यपूर्ण चुनाव और वरीयता द्वारा प्रदर्शित होती है। जिस तरह प्रत्येक चेहरा अनगिनत तरीकों से एक सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व की गवाही देता है और उसकी विशिष्टता की ओर इशारा करता है, उसी तरह सभी चेहरों द्वारा प्रदर्शित एकता की मुहर मन की आंखों को दिखाती है कि यह सभी चीजों के निर्माता की मुहर है।

आप किस कार्यशाला को उन टिकटों का श्रेय दे सकते हैं जिनकी नकल नहीं की जा सकती, तथा ईश्वर के सनातन सर्वप्रथम प्रकट होने की शानदार मुहर को, जो वे एक समग्र रूप में बनाते हैं?

तीसरी खिड़की

पृथ्वी पर असंख्य वनस्पतियों और प्राणियों की विशाल सेना को पूर्णतया सही माप और क्रम में, बिना किसी भ्रम और विस्मृति के, एक विशेष रूप और परिधान तथा एक विशेष विशेषता दी गई है।

दृष्टि और हथियार; और प्रत्येक प्रजाति को एक अनोखे तरीके से प्रशिक्षित और निष्क्रिय किया जाता है।1 यह उस एक और अद्वितीय की मुहर है, एक मुहर जो सूर्य की तरह चमकदार है और इस प्रकार संदेह से परे है। असीम शक्ति, सर्वव्यापी ज्ञान और अनंत बुद्धि वाले के अलावा कौन उस असीम रूप से अद्भुत प्रशासन में हिस्सा लेने का साहस कर सकता है? यदि कोई व्यक्ति जो इन सभी प्रजातियों और जातियों को एक साथ प्रशासित और प्रशिक्षित नहीं कर सकता है, जो आपस में मिश्रित हैं, उनमें से किसी एक के साथ हस्तक्षेप करना चाहता है, तो निश्चित रूप से भ्रम पैदा होगा। हालाँकि, हम पढ़ते हैं, फिर से देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देती है? (67:3)। चूँकि किसी भी शून्यता या भ्रम का कोई संकेत नहीं है, इसलिए कोई भी सृष्टि में भाग नहीं ले सकता।

चौथी खिड़की

बीज अपनी प्रकृति और सामर्थ्य की भाषा में प्रार्थना करते हैं, पशु अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं की भाषा में प्रार्थना करते हैं, और वे सभी जो विकट परिस्थितियों में हैं, विवशता की भाषा में प्रार्थना करते हैं। प्रत्येक प्रार्थना का उत्तर मिलता है।

चूंकि प्रत्येक प्रार्थना जो उत्तर में प्राप्त होती है, ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देती है और उसकी ओर संकेत करती है, इसलिए वे सभी स्वयं-स्पष्ट रूप से समग्र रूप से और बड़े पैमाने पर एक सर्व-दयालु, सर्व-उदारवादी और सर्व-उत्तर देने वाले सृष्टिकर्ता की ओर संकेत करती हैं।

[1] इनमें कुछ ऐसी प्रजातियां भी हैं जिनकी एक वर्ष की संख्या, आदम के समय से लेकर संसार के अंत तक, अब तक जीवित रहे सभी लोगों की संख्या से अधिक है।

पांचवी खिड़की

हम देखते हैं कि चीज़ें, खास तौर पर जीवित चीज़ें, ऐसा प्रतीत होता है मानो एक साथ ही अस्तित्व में आ गई हों। इसे देखते हुए, हम उनसे सरल, स्थूल और बिना किसी कला के होने की अपेक्षा करेंगे। इसके बजाय, वे इतनी बारीकी से बनाई गई हैं कि कई कौशल की आवश्यकता होती है, इतनी सावधानी और नाजुक ढंग से सजाई गई हैं कि लंबे समय की आवश्यकता होती है, इतनी कलात्मक रूप से अलंकृत की गई हैं कि कई औज़ारों की आवश्यकता होती है, और इतनी विस्तृत रूप से बनाई गई हैं कि बहुत अधिक सामग्री की आवश्यकता होती है। इसलिए, जिस तरह सभी चीज़ों को एक साथ दिए गए सुंदर रूप, साथ ही उन पर प्रकट की गई अद्भुत कलात्मकता, एक सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है और उसके प्रभुत्व की एकता की ओर इशारा करती है, उसी तरह, समग्र रूप से वे एक अत्यंत शानदार तरीके से एक अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की ओर इशारा करते हैं जो असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान है।

आप इसे कैसे समझाएँगे? क्या इसे अज्ञानी प्रकृति के कारण माना जा सकता है? क्या आप उस सर्व-पवित्र निर्माता को "प्रकृति" कह सकते हैं और उसकी शक्ति के चमत्कारों को उसके कारण बता सकते हैं?

यह सबसे बड़ी गलती है और इस मामले को इस तरह से देखना अकल्पनीय है।

छठी खिड़की

> निश्चय ही आकाशों और धरती की रचना में, और रात और दिन के आने-जाने में, और समुद्र में लोगों के लाभ के लिए नावों के चलने में, और उस जल में जिसे ईश्वर ने आकाश से बरसाया, और उसके द्वारा धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाया और उसमें फैलाया-

> हर प्रकार के जीवित प्राणियों में, तथा हवाओं के संचालन में, तथा आकाश और धरती के बीच बादलों में, निश्चय ही उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें। (2:164)

यह श्लोक, जो ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता को दर्शाता है, एक बहुत बड़ी खिड़की है जिसके माध्यम से ईश्वर के महानतम नामों में से एक को देखा जा सकता है। संक्षेप में, ब्रह्मांड के उच्च और निम्न स्तरों पर स्थित सभी क्षेत्र अलग-अलग भाषाओं में एक ही परिणाम की ओर इशारा करते हैं: एक ही सर्वज्ञ निर्माता का प्रभुत्व। जिस तरह व्यापक परिणामों के लिए स्वर्ग में सुव्यवस्थित और व्यवस्थित हलचलें एक सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान के अस्तित्व और एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को दर्शाती हैं, उसी तरह जबरदस्त मौसमी और अन्य परिवर्तन जो पूरी तरह से व्यापक लाभों में परिणत होते हैं, उस सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान की एकता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

सभी स्थल तथा जल प्राणियों को पूर्ण दया के माध्यम से भोजन दिया जाता है, पूर्ण बुद्धि के साथ उन्हें रूप प्रदान किए जाते हैं, तथा पूर्ण प्रभुत्व के माध्यम से उन्हें इन्द्रियाँ तथा क्षमताएँ प्रदान की जाती हैं।

चूंकि उनमें से प्रत्येक उस सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान के अस्तित्व की गवाही देता है और उसकी एकता की ओर इशारा करता है, इसलिए कुल मिलाकर वे बड़े पैमाने पर उसकी दिव्यता की भव्यता और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं। इसी तरह, बगीचों और बगीचों में सभी अच्छी तरह से विकसित पौधे और उनके अलंकृत फूल, फूलों की जगह लेने वाले सुडौल फल और फलों द्वारा प्रदर्शित समृद्ध अलंकरण उस सर्वज्ञ की गवाही देते हैं।

निर्माता के अस्तित्व को दर्शाते हैं और व्यक्तिगत रूप से उसकी एकता की ओर इशारा करते हैं। सामूहिक रूप से, वे उसकी दया की कृपा और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को शानदार तरीके से दिखाते हैं।

वायुमंडल से भेजी गई सभी बूंदें और महत्वपूर्ण उद्देश्यों, आवश्यक परिणामों और लाभों के साथ उनकी संख्या से पता चलता है कि सर्व-बुद्धिमान निर्माता का

आवश्यक अस्तित्व और एकता तथा उनके प्रभुत्व की पूर्णता। इसी तरह, सभी पहाड़ और उनमें विभिन्न उद्देश्यों के लिए जमा किए गए विभिन्न प्रकार के खनिज, पहाड़ों की तरह ही दृढ़ता से दिखाते हैं कि सर्वज्ञ निर्माता का अस्तित्व और एकता तथा उनके प्रभुत्व की पूर्णता। पहाड़ियों और मैदानों को सजाने वाले सभी सुंदर फूल व्यक्तिगत रूप से सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं और उनकी एकता की ओर इशारा करते हैं। सामूहिक रूप से, वे उनकी संप्रभुता की महिमा और उनके प्रभुत्व की पूर्णता को दर्शाते हैं।

इसी प्रकार, जड़ी-बूटियों और वृक्षों के पत्तों की सभी सुसंगठित आकृतियां और स्थितियां, साथ ही उनकी उल्लासमय और व्यवस्थित गतिविधियां, उनके पत्तों की संख्या से सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता तथा उसके प्रभुत्व की पूर्णता को दर्शाती हैं।

सभी बढ़ते हुए शरीर अपने विकास के दौरान विभिन्न अंगों और प्रणालियों से सुसज्जित होते हैं, और एक व्यवस्थित तरीके से चलना शुरू करते हैं और फल देने की दिशा में निर्देशित होते हैं। हर एक उस सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है और उसकी एकता की ओर इशारा करता है।

कुल मिलाकर, वे उसकी शक्ति की व्यापकता, उसकी बुद्धि की समावेशिता, उसकी कला की पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं।

सौंदर्य, और उनके आधिपत्य की पूर्णता बहुत बड़े पैमाने पर। सभी पशु शरीरों में पूर्ण बुद्धि के साथ आत्माओं और आत्माओं को स्थापित करना, उन्हें पूर्ण व्यवस्था के साथ उपयुक्त प्रणालियों से सुसज्जित करना, और उन्हें पूर्ण बुद्धि के साथ अद्वितीय सेवाओं और उद्देश्यों के लिए जुटाना—

यह सब उस सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है और उसकी ओर इशारा करता है। सामूहिक रूप से, ये कार्य उसकी दया और उसके प्रभुत्व की पूर्णता को सबसे शानदार तरीके से दिखाते हैं।

सभी दिव्य प्रेरणाएँ जो मानवता को सभी प्रकार के ज्ञान और सत्य का निर्देश देती हैं, और जानवरों को सिखाती हैं कि वे अपनी ज़रूरतों को कैसे पूरा करें, एक सर्व-दयालु भगवान के अस्तित्व का सुझाव देती हैं और उनकी प्रभुता की ओर इशारा करती हैं। साथ ही, जैसे आँखों से आने वाली प्रकाश की किरणें आँखों के सामने ब्रह्मांड के बगीचे में सभी "फूलों" को एक साथ इकट्ठा करती हैं, वैसे ही हर बाहरी और आंतरिक इंद्रिय एक अलग क्षेत्र की कुंजी के रूप में व्यक्तिगत रूप से कार्य करती है। यह सूर्य की तरह चमकते हुए, उस सर्व-बुद्धिमान निर्माता, सर्व-ज्ञानी सृजक, सर्व-दयालु प्रदाता और उसकी एकता और प्रभुता की पूर्णता के आवश्यक अस्तित्व को दर्शाता है।

इस प्रकार ऊपर बताई गई बारह खिड़कियों के माध्यम से एक विशाल खिड़की खुलती है। यह सत्य के बारह रंगों के प्रकाश के माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर की एकता और अद्वितीयता और उनके प्रभुत्व की पूर्णता को दर्शाता है। आप उस खिड़की को कैसे बंद कर सकते हैं, जो पृथ्वी या सूर्य के चारों ओर उसकी कक्षा जितनी चौड़ी है? आप इसे कैसे बुझा सकते हैं

वह प्रकाश का स्रोत, जो सूर्य के समान उज्ज्वल है, उसे तुम किस असावधानी के आवरण के पीछे छिपा सकते हो?

सातवीं खिड़की

जीवों की अनगिनत किस्में और प्रजातियाँ आसानी से अस्तित्व में आती हैं और कई मायनों में एक दूसरे से मिलती जुलती हैं।
वे पृथ्वी पर पूर्ण व्यवस्था के साथ फैले हुए हैं और एक पूर्ण अनुपात और उपकरण दिखाते हैं। यह सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता और उसकी शक्ति की पूर्णता को व्यापक पैमाने पर प्रदर्शित करता है। सरल निर्जीव तत्वों से असंख्य और अद्वितीय अच्छी तरह से संयोजित यौगिक प्राणियों का निर्माण भी उस सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है और उसकी एकता की ओर इशारा करता है। कुल मिलाकर, ये प्राणी उसकी शक्ति की पूर्णता और उसकी एकता को सबसे शानदार तरीके से दिखाते हैं।

इसके अलावा, अनंत प्रचुरता के भीतर अनंत डिग्री का विभेदन और संयोजन है। उदाहरण के लिए, जबकि बीज और जड़ें भूमिगत रूप से मिश्रित रूप में मौजूद हैं, वे विकास में आश्चर्यजनक रूप से अलग हैं। भोजन के कणों की तरह शरीर में भ्रम की स्थिति में प्रवेश करते हैं और फिर अलग हो जाते हैं और अंगों और ऊतकों के बीच पूर्ण माप और बुद्धि के साथ साझा किए जाते हैं, पेड़ों में प्रवेश करने वाले उलझे हुए पदार्थ पत्तियों, फूलों और फलों के बीच अलग-अलग वितरित किए जाते हैं। यह उस पूर्ण रूप से बुद्धिमान, जानकार और शक्तिशाली व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व को दर्शाता है, साथ ही उसकी एकता और उसकी शक्ति की पूर्णता को भी दर्शाता है।

यह उनकी आवश्यक सत्ता, उनकी शक्ति की पूर्णता और उनके प्रभुत्व की महानता और पूर्णता को भी दर्शाता है कि वे परमाणुओं के संसार को एक असीम, विशाल क्षेत्र बनाते हैं और फिर हर पल पूर्ण बुद्धि के साथ उसमें बीज बोते और काटते हैं। वे उसमें से विभिन्न क्षेत्रों की नई फसलें प्राप्त करते हैं और उन अचेतन, शक्तिहीन और अज्ञानी परमाणुओं से असंख्य व्यवस्थित कार्य करवाते हैं, जैसे कि वे अत्यंत विद्वान, सचेत और सक्षम हों।

इस प्रकार इन चार तरीकों से ईश्वर के ज्ञान पर एक बड़ी खिड़की खुलती है, और वे बड़े पैमाने पर मन को एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता प्रदर्शित करते हैं। यदि आप उसे इस खिड़की से देखना और पहचानना नहीं चाहते हैं, तो अपने आप को तर्क से मुक्त करें ताकि एक जानवर की तरह बन जाएँ और देखें कि क्या आप इस तरह से बच सकते हैं!

आठवीं खिड़की

सभी पैगम्बरों (उन पर शांति हो) की गवाही, जो उनके प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष चमत्कारों पर आधारित है; सभी संतों (जो प्रबुद्ध हृदय वाले प्रतिष्ठित हैं) की गवाही, जो उनके चमत्कारी कार्यों और आध्यात्मिक खोजों पर आधारित है; और सभी शुद्ध विद्वानों (जिनके पास प्रबुद्ध मन है) की गवाही, जो उनके शोध और सत्य की खोज पर निर्भर है, सभी आवश्यक अस्तित्व और एकता, सभी चीजों के निर्माता, और उनकी शक्ति की पूर्णता की गवाही देते हैं। वे एक विशाल और प्रबुद्ध-

वह खिड़की जिसके माध्यम से उनका प्रभुत्व - बनाए रखना, प्रशिक्षण देना, उठाना, आदि - स्वयं को निरंतर प्रकट करता है।

आप किस पर भरोसा करते हैं कि आप उन लोगों की बात नहीं सुनते?

या फिर दिन में अपनी आँखें बंद करके क्या आप कल्पना करते हैं कि दुनिया अंधकार में है?

नौवीं खिड़की

सभी प्राणियों की पूजा एक परम पूज्य को दर्शाती है। जैसा कि उन लोगों द्वारा प्रमाणित किया गया है जो आत्माओं की दुनिया और चीजों के आंतरिक आयाम में प्रवेश करते हैं, जहाँ वे स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों से मिलते हैं, सभी देवदूत और आत्मिक प्राणी पूर्ण आज्ञाकारिता में एक शाश्वत पूज्य की पूजा करते हैं। हम सभी देखते हैं कि सभी जीवित प्राणी पूजा के समान तरीके से पूर्ण क्रम में कर्तव्यों का पालन करते हैं, और सभी निर्जीव चीजें उसी तरह पूर्ण समर्पण के साथ सेवाएं प्रदान करती हैं। यह सब पूजा की एक सच्ची वस्तु के आवश्यक अस्तित्व और एकता को दर्शाता है।

यही बात सभी संतों द्वारा ईश्वर को जानने के सच्चे ज्ञान (जिस पर सर्वसम्मति का भार है), सभी कृतज्ञ लोगों के फलदायी धन्यवाद, ईश्वर के नामों और गुणों के साथ नियमित रूप से उसका स्मरण करने वालों के धन्य पाठ, ईश्वर की स्तुति करने वालों की स्तुति (जो ईश्वरीय कृपा को बढ़ाती है), ईश्वरीय एकता पर विश्वास करने वालों की घोषणाएं और विवरण (निर्णायक प्रमाणों पर आधारित), ईश्वर के सभी प्रेमियों का सच्चा प्रेम, ईश्वर की सच्ची इच्छा और विश्वास

जो लोग उसे खोजते हैं उनकी इच्छाएँ, और जो लोग उसकी ओर मुड़ते हैं उनकी उत्सुक खोज और प्रवृत्तियाँ। यह सब उस शाश्वत पूज्य के आवश्यक अस्तित्व और एकता को दर्शाता है, जो सर्व-मान्य, सर्व-उल्लेखित, सर्व-प्रशंसित, सर्व-प्रिय, सर्व-इच्छित और सर्व-चाहा है, साथ ही साथ उसकी प्रभुता की पूर्णता भी है।

इसके अलावा, सिद्ध लोगों की स्वीकार्य पूजा और प्रार्थनाएँ, साथ ही उनकी आध्यात्मिक चमक, दर्शन और उनकी पूजा से उत्पन्न होने वाली रोशनी, उस शाश्वत और शाश्वत पूज्य के आवश्यक अस्तित्व और एकता और उनके प्रभुत्व की पूर्णता को प्रदर्शित करती हैं। ये तीन पहलू दिव्य एकता पर एक विस्तृत, प्रकाश देने वाली खिड़की खोलते हैं।

दसवीं खिड़की

> अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और आकाश से पानी बरसाया जिससे तुम्हारे लिए फल पैदा होते हैं। और उसने तुम्हारे लिए नावों को उपयोगी बनाया, ताकि वे उसके आदेश से समुद्र में चलें। और उसने नदियों को तुम्हारे लिए उपयोगी बनाया। और उसने सूर्य और चंद्रमा को उनके मार्ग में स्थिर रखा, ताकि वे तुम्हारे लिए उपयोगी हों। और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए सेवा के लिए बनाया। और उसने तुम्हें जो कुछ भी तुम उससे मांगते हो, वह प्रदान किया। यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकोगे। (14: 32-34)

प्राणियों की पारस्परिक सहायता और एकजुटता तथा एक दूसरे की सहायता के लिए की गई पुकार पर उनका प्रत्युत्तर देना यह दर्शाता है कि

सभी प्राणियों को एक प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है, एक निर्देशक द्वारा प्रशासित किया जाता है, एक निपटानकर्ता द्वारा नियंत्रित किया जाता है, और एक स्वामी की सेवा की जाती है। आपसी मदद के एक सार्वभौमिक नियम के माध्यम से, सूर्य भगवान के आदेश से, पृथ्वी के जीवित प्राणियों को जीवित रहने के लिए जो कुछ भी चाहिए, उसे पकाता है।

चंद्रमा एक कैलेंडर के रूप में कार्य करता है; प्रकाश, वायु, जल और खाद्य पदार्थ सजीव प्राणियों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; पौधे पशुओं की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; पशु और पौधे मनुष्यों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; शरीर के अंग एक-दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं; और भोजन के कण कोशिकाओं की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं।

अचेतन प्राणियों के बीच यह सबसे बुद्धिमानीपूर्ण और उदार सहयोग, एक दूसरे की ज़रूरतों के प्रति उनका जवाब देना और उदारता और अनुग्रह के नियम, करुणा और देखभाल के नियम और दया के सिद्धांत के तहत एक दूसरे का समर्थन करना, यह दर्शाता है कि वे एक अद्वितीय एकता के सेवक, अधिकारी और प्राणी हैं, एक अद्वितीय, सभी के लिए अनंत काल से प्रार्थनीय, एक परम शक्तिशाली, परम ज्ञानी, परम दयालु, परम उदार और अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान। हे भौतिकवादी दर्शन और वैज्ञानिकता के अनुयायी, आप इस शक्तिशाली खिड़की पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं?

क्या इसमें संयोग का हाथ हो सकता है?

ग्यारहवीं खिड़की

> ध्यान रहे, केवल ईश्वर के स्मरण और उनके प्रति पूर्ण समर्पण से ही हृदय को शांति और सन्तुष्टि मिलती है।
>
> तंबू. (13:28)

केवल अपने एक रचयिता को पहचानने से ही सभी आत्माएँ और हृदय पथभ्रष्टता के संकट और उलझन से, तथा उस संकट से उत्पन्न होने वाली आध्यात्मिक पीड़ाओं से मुक्त हो सकते हैं। सभी प्राणियों को एकता के रचयिता के अधीन करने से उन्हें मुक्ति मिलती है, तथा वे एक ईश्वर के स्मरण में विश्राम और संतोष पाते हैं। क्योंकि, जैसा कि बाईसवें वचन [शब्दों में] में सिद्ध किया गया है, यदि उन सभी असंख्य प्राणियों को एक ही सत्ता के अधीन नहीं किया जाता है, तो एक चीज़ को असंख्य कारणों के अधीन किया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में, एक चीज़ का अस्तित्व पूरी सृष्टि जितना ही कठिन हो जाता है; एक फल उतना ही कठिन हो जाता है जितना कि ब्रह्मांड, बल्कि उससे भी अधिक कठिन। इस पर विचार करें: यदि एक सैनिक को सौ अधिकारियों द्वारा आदेश दिया जाता है, तो सौ कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी। लेकिन यदि सौ सैनिकों को एक अधिकारी द्वारा आदेश दिया जाता है, तो उन्हें आदेश देना एक सैनिक के समान ही आसान होगा। यह सृष्टि के मामले में भी सत्य है, क्योंकि एक चीज़ को अनेक कारणों से बनाने पर उतनी ही समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जितने कारण हैं। इसे देखते हुए, सृष्टिकर्ता की एकता और ईश्वर के ज्ञान में विश्वास हमें सत्य को खोजने की जिज्ञासा और इच्छा से उत्पन्न होने वाले अंतहीन संकट से मुक्ति दिलाएगा, जो हमारे स्वभाव में निहित है।

अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार बनाना इतनी सारी मुश्किलें और पीड़ाएँ पैदा करता है कि उनमें स्पष्ट रूप से कोई सत्य नहीं हो सकता। इसके विपरीत, हम देखते हैं कि कितनी आसानी से चीज़ें और प्राणी बहुत विविधता और बहुलता के साथ अस्तित्व में आते हैं और फिर भी अत्यंत सुंदरता और

कलात्मकता। सृजन की इस सहजता को केवल सृष्टि को एक ईश्वर को समर्पित करके ही समझाया जा सकता है। चूँकि एक ईश्वर में विश्वास करने का मार्ग अनंत सरल है, इसलिए यह निश्चित रूप से आवश्यक है और सत्य भी है। देखिए कि गुमराही का मार्ग कितना अंधकारमय और कष्टदायक है। आप इसे क्यों अपनाते हैं, जब आप देख सकते हैं कि विश्वास और ईश्वरीय एकता की पुष्टि का मार्ग कितना आसान और सुखद है? उस मार्ग को अपनाएँ और मुक्ति पाएँ।

बारहवीं खिड़की

> अपने रब के नाम की तसबीह करो, जो सर्वोच्च है, जिसने पैदा किया और सुव्यवस्थित बनाया, और जिसने निर्णय किया और मार्ग दिखाया। (87:1-3)

जैसा कि श्लोक में कहा गया है, सभी चीज़ों, खास तौर पर जीवित चीज़ों, का उनके कार्यों के अनुसार एक रूप और अच्छी तरह से मापा हुआ अनुपात होता है, जैसे कि वे ज्ञान के साँचे से निकले हों। प्रत्येक को एक अनूठा आकार दिया गया है, जिसमें उसके निर्धारित लाभों और उपयोगों के अनुसार वक्र और मोड़ हैं। उनके परिणामस्वरूप होने वाले बाहरी और आंतरिक परिवर्तन और नवीनीकरण उनके जीवन के लिए निर्धारित कुछ उपायों और उद्देश्यों के अनुसार होते हैं। यह सब दर्शाता है कि इन असंख्य प्राणियों के आकार और अनुपात एक सर्वशक्तिमान महामहिम, एक सर्वज्ञ पूर्णता वाले व्यक्ति के सर्व-समावेशी निर्धारण या नियति के ढांचे के भीतर योजनाबद्ध हैं, और उन्हें दिव्य शक्ति की कार्यशाला में रूप और शरीर दिए गए हैं। यह सब उसकी आवश्यक शक्ति की ओर इशारा करता है

अस्तित्व में है और अपनी एकता और अपनी शक्ति की पूर्णता का असंख्य भाषाओं में साक्ष्य देता है।

अपने शरीर और उसके अंगों को देखें। प्रत्येक मोड़ और मोड़ के उपयोग और लाभ पर विचार करें, और पूर्ण बुद्धि में निहित शक्ति की पूर्णता को देखें!

तेरहवीं खिड़की

जैसा कि कहा गया है कि ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी प्रशंसा से उसकी महिमा न करे (17:44), प्रत्येक चीज़ अपनी भाषा में अपने सृष्टिकर्ता का उल्लेख करती है और उसकी महिमा करती है। ये महिमा-गान, चाहे मौखिक हों या उनके जीवन और स्वभाव की भाषा में, एक ही सर्व-पवित्र व्यक्ति के अस्तित्व को दर्शाते हैं।

स्वभाव या प्रकृति की गवाही को अस्वीकार नहीं किया जाता है। व्यावहारिक जीवन द्वारा प्रस्तुत प्रमाण, विशेष रूप से जब वह उस जीवन के कई पहलुओं से निकलता है, संदेह को जन्म नहीं दे सकता। देखें कि कैसे जीवों के सुव्यवस्थित रूप, जो सृजन और स्वभाव की अनगिनत गवाही प्रदर्शित करते हैं, और अपने जीवन और व्यवहार की भाषा में गवाही देते हैं, और जो सभी संकेंद्रित वृत्तों की तरह एक ही केंद्र की ओर मुड़ते हैं, प्रत्येक एक अभिव्यंजक भाषा है। उनकी सुव्यवस्थित संरचनाएँ और संगठन गवाही की भाषाएँ हैं, और उनका सुव्यवस्थित जीवन महिमा की भाषाएँ हैं। जैसा कि चौबीसवें वचन में तर्क दिया गया है, ये महिमा और उत्कर्ष एक ही सर्व-पवित्र सत्ता की गवाही देते हैं, उसके आवश्यक अस्तित्व को निश्चित रूप से प्रदर्शित करते हैं जैसे प्रकाश सूर्य को दिखाता है, और उसकी दिव्यता की पूर्णता की ओर इशारा करते हैं।

चौदहवीं खिड़की

> कह दो, "किसके हाथ में है हर चीज़ का पूरा शासन?" (23:88)
>
> कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास हैं। (15:21)
>
> कोई भी चलता फिरता प्राणी ऐसा नहीं है जिसे वह अपनी लटों से थामे रखे। (11:56)
>
> निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ पर नज़र रखता है और उसका हिसाब रखता है। (11:57)

इन श्लोकों में कहा गया है कि हर चीज़ को, उसके जीवन और अस्तित्व के सभी परिस्थितियों और पहलुओं में, एक ही महान निर्माता की आवश्यकता होती है। जीवों को देखते हुए, हम पूर्ण कमज़ोरी के भीतर एक पूर्ण शक्ति की अभिव्यक्ति और पूर्ण नपुंसकता में एक पूर्ण शक्ति के प्रभाव और शिलालेख देखते हैं। उदाहरण के लिए, पौधों के बीजों और जड़ों में जीवन-शक्ति का जागरण असाधारण है।

पूर्ण धन की अभिव्यक्तियाँ भी हैं

पूर्ण गरीबी और बंजरपन के भीतर, जैसे सर्दियों में मिट्टी और पेड़ों की गरीबी और वसंत में उनकी चमक-दमक। पूर्ण जीवन की चिंगारियाँ पूर्ण रूप से निर्जीव पदार्थ में देखी जाती हैं (उदाहरण के लिए, खनिज तत्वों का जीवित प्राणियों में परिवर्तन)। सर्वव्यापी चेतना की अभिव्यक्तियाँ पूर्ण अज्ञानता में देखी जाती हैं, जैसे कि जब सब कुछ सचेत रूप से ब्रह्मांड के क्रम, जीवन के सिद्धांतों और ज्ञान की माँगों के अनुरूप कार्य करता है। ये सभी अभिव्यक्तियाँ—

नपुंसकता के भीतर शक्ति, कमजोरी के भीतर बल या ताकत, गरीबी के भीतर धन, और निर्जीवता और अज्ञानता के भीतर जीवन और चेतना - एक परम शक्तिशाली, मजबूत, अमीर और जानकार, साथ ही जीवित और आत्मनिर्भर के आवश्यक अस्तित्व और एकता की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ। अपनी समग्रता में, वे बड़े पैमाने पर एक चमकदार राजमार्ग (ईश्वर और उसकी एकता में विश्वास करने का मार्ग) की ओर इशारा करते हैं।

यदि आप ईश्वरीय शक्ति को मान्यता देने के बजाय प्रकृति को सृजनात्मकता का श्रेय देते हैं और इसे स्वयं-उत्पन्न मानते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक वस्तु में एक असीम शक्ति और सामर्थ्य, बुद्धि और कौशल, तथा अधिकांश अन्य चीजों को देखने, जानने और निर्देशित करने की क्षमता निहित है।

पंद्रहवीं खिड़की

जैसा कि वह जो हर चीज़ को उत्कृष्ट बनाता है (32:7) में घोषित किया गया है , हर चीज़ अस्तित्व में लिपटी हुई है और एक ऐसा रूप है जो अपनी प्रकृति की ग्रहणशीलता के अनुसार एकदम सही माप और क्रम के साथ तैयार किया गया है, बेहतरीन कला के साथ और सबसे सीधे तरीके से, सबसे अच्छे आकार और सबसे आसान तरीके से, और सबसे व्यावहारिक विशेषताओं के साथ इकट्ठा किया गया है। पक्षियों की "पोशाक" को देखें और देखें कि वे कितनी आसानी से अपने पंखों को उलझा सकते हैं और लगातार उनका उपयोग कर सकते हैं।

वस्तुओं को शरीर देना और उन्हें ऐसे रूप देना जैसा कि बताया गया है, बुद्धिमानी से और बिना किसी बर्बादी के

व्यर्थता उन चीजों की संख्या के लिए, एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता की आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है और एक पूर्ण शक्तिशाली और जानने वाले की ओर इशारा करती है।

सोलहवीं खिड़की

पृथ्वी पर हर मौसम में भर्ती किए जाने वाले जीवों के निर्माण और प्रबंधन में व्यवस्था और संगठन, एक सार्वभौमिक उद्देश्यपूर्णता और बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। चूँकि कोई गुण उस गुण के बिना नहीं हो सकता है जिसके लिए वह योग्य है, इसलिए वह सार्वभौमिक ज्ञान एक बुद्धिमान व्यक्ति को दर्शाता है। अद्भुत

ज्ञान के उस पर्दे के भीतर का श्रृंगार एक सर्वव्यापीता को दर्शाता है

अनुग्रह को गले लगाना, जो एक सर्व-कृपालु निर्माता को उदारता से दर्शाता है। अनुग्रह के उस पर्दे के भीतर सर्वव्यापी अनुग्रह और परोपकार एक सर्वव्यापी दया को दर्शाता है, जो एक सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय को दर्शाता है। दया के उस पर्दे पर सभी जीवित प्राणियों का पोषण और प्रावधान, जो उनकी आवश्यकताओं के लिए पूर्ण और उचित है, प्रावधान और एक दयालु आधिपत्य का पालन-पोषण और गुण दर्शाता है। वह प्रशिक्षण और प्रशासन एक सर्व-उदार प्रदाता को दर्शाता है।

प्रत्येक प्राणी, पूर्ण बुद्धि के साथ बड़ा हुआ, पूर्ण कृपा से सुसज्जित और सुशोभित, पूर्ण दया से अनुग्रहित, और पूर्ण देखभाल और करुणा के साथ पोषित, एक सर्व-बुद्धिमान, उदार, दयालु, प्रदान करने वाले निर्माता के आवश्यक अस्तित्व का साक्ष्य देता है और उसकी एकता की ओर संकेत करता है। पूरी पृथ्वी पर प्रकट सर्वव्यापी ज्ञान पर विचार करें और जो स्पष्ट रूप से प्रकट होता है

उद्देश्य और इच्छा को दर्शाता है; पूर्ण अनुग्रह सभी प्राणियों को बुद्धि के अनुसार अपने में समाहित करता है; व्यापक दया जिसमें अनुग्रह और बुद्धि दोनों सम्मिलित हैं तथा जो सभी प्राणियों को अपने में समाहित करती है; तथा सबसे उदार पोषण तथा पोषण जिसमें दया, बुद्धि और अनुग्रह सम्मिलित हैं तथा जो सभी जीवित प्राणियों को अपने में समाहित करती है।

जिस प्रकार सात रंग मिलकर प्रकाश बनाते हैं और पृथ्वी को प्रकाशित करने वाला प्रकाश सूर्य को दर्शाता है, उसी प्रकार ज्ञान के भीतर अनुग्रह, अनुग्रह के भीतर दया, तथा दया के भीतर पोषण और पोषण, एक सर्वज्ञानी, सर्वदानी, सर्वकरुणामय, सर्वप्रदाता और अनिवार्यतः विद्यमान एक की एकता और प्रभुता को शानदार ढंग से, विशाल पैमाने पर और उच्च स्तर पर दर्शाते हैं।

इस बुद्धिमतापूर्ण, दयालु, उदार, तथा ईश्वरीय पालन-पोषण और उत्थान को, जो तुम्हारी आँखों के सामने है; इस असाधारण, अद्भुत, चमत्कारी स्थिति को तुम कैसे समझा सकते हो? संयोगवश, अंध शक्ति, मूक-बधिर प्रकृति से, या शक्तिहीन, निर्जीव और अज्ञानी कारणों से? उस महाप्रतापी को, जो असीम रूप से शक्तिशाली, जाननेवाला, सुननेवाला और देखनेवाला है, "प्रकृति" का नाम देकर, जो असीम रूप से अशक्त, अज्ञानी, बहरी, अंधी, आकस्मिक और असहाय है? क्या तुम ऐसी गंभीर गलती करना चाहते हो? तुम सूर्य के समान तेजस्वी सत्य को कैसे बुझा सकते हो? किस असावधानी के आवरण में तुम उसे छिपा सकते हो?

सत्रहवीं खिड़की

निस्संदेह आकाशों और धरती में ईमान लानेवालों के लिए निशानियाँ हैं। (45:3)

निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें: गर्मियों

- के दौरान हम चीजों के निर्माण में एक असीम उदारता और पूर्ण उदारता देखते हैं, जिससे एक असीम व्यवस्था और सामंजस्य के भीतर अव्यवस्था और भ्रम पैदा होने की उम्मीद की जा सकती है। पृथ्वी के चेहरे को सजाने वाले सभी पौधों को देखें।

- चीजों के निर्माण में पूर्ण गति, जो सामान्यतः असंतुलन और मर्यादा की हानि का कारण बनती है, पूर्ण संतुलन और अनुपात के भीतर देखी जाती है।

पृथ्वी के चेहरे को सजाते हुए सभी फलों को देखें।

- कला की संपूर्ण सुंदरता में वह संपूर्ण बहुलता और विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो सामान्यतः तुच्छता और यहां तक कि कुरूपता भी लाती है। धरती के चेहरे पर लगे सभी फूलों को देखिए।

- चीजों को बनाने में पूर्ण सहजता, जो सामान्यतः सरलता और कला की कमी का कारण बनती है, वह अनंत स्तर की कला, कौशल और ध्यान के भीतर देखी जाती है।

सभी बीजों को देखें, जो सभी पौधों और वृक्षों के छोटे-छोटे कंटेनरों और कार्यक्रमों के समान हैं, तथा उनके जीवन-इतिहास वाले छोटे-छोटे बक्सों के समान भी हैं।

- महान दूरियाँ, जिनके लिए सामान्यतः अंतर और विविधता की आवश्यकता होती है, निरपेक्षता के भीतर दिखाई देती हैं।

पत्राचार और अनुरूपता का अभाव। दुनिया भर में बोए जाने वाले अनाज की सभी किस्मों को देखें। • पूर्ण अंतर्संबंध, जो सामान्य रूप से भ्रम और गड़बड़ी का कारण बनता है, पूर्ण विभेदन और पृथक्करण के भीतर देखा जाता है। विचार करें कि कैसे बीज, जमीन में डाले गए सभी एक साथ मिश्रित होते हैं और अपने पदार्थ के संबंध में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, जब वे अंकुरित होने वाले होते हैं तो पूरी तरह से विभेदित होते हैं। देखें कि पेड़ों में प्रवेश करने वाले विभिन्न पदार्थ पत्तियों, फूलों और फलों के लिए पूरी तरह से अलग कैसे होते हैं, और कैसे पेट में प्रवेश करने वाले सभी खाद्य पदार्थ एक साथ मिश्रित होते हैं और शरीर के अंगों और कोशिकाओं के लिए पूरी तरह से अलग होते हैं। इन सब पर विचार करें और पूर्ण ज्ञान के भीतर पूर्ण शक्ति देखें।

• असीम प्रचुरता और प्रचुरता, जो सामान्यतः तुच्छता और मूल्यहीनता का कारण बनती है, मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक मूल्यवान और सार्थक प्रतीत होती है।

पृथ्वी के प्राणियों और कला के प्रति सम्मान। कला के उन असंख्य आश्चर्यों में से, केवल शहतूत की किस्मों पर विचार करें, जो पृथ्वी पर सर्व-दयालु की मेज पर दिव्य शक्ति की मिठाइयाँ हैं, और पूर्ण कला के साथ संयुक्त पूर्ण दया का निरीक्षण करें।

जिस प्रकार दिन का प्रकाश और प्रकाश का सूर्य से परिचय होता है, उसी प्रकार अनंत प्रचुरता के बावजूद महान मूल्य, अनंत प्रचुरता के भीतर, असीम अंतर्संबंध के बावजूद अनंत भेद और पृथक्करण,

अनंत भिन्नता और पृथक्करण, महान दूरियों के बावजूद अनंत अनुरूपता और समानता; अनंत समानता के भीतर, अनंत सहजता और सुविधा के बावजूद निर्माण में अनंत देखभाल और ध्यान; सबसे सुंदर निर्माण के भीतर, पूर्ण गति और तेज़ी के बावजूद अनंत संतुलन, संतुलन और बर्बादी की कमी; बर्बादी की चरम कमी के भीतर, अत्यधिक प्रचुरता और बहुलता के बावजूद कला की सुंदरता की सर्वोच्च डिग्री; कला की सर्वोच्च डिग्री के भीतर, अत्यधिक उदारता के बावजूद पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य - ये सभी एक सर्वशक्तिमान महामहिम, एक सर्वज्ञानी पूर्णता, एक परम दयालु अनुग्रह और सौंदर्य, और उनकी शक्ति की पूर्णता और उनके प्रभुत्व की कृपा और सुंदरता के आवश्यक अस्तित्व, एकता और एकरूपता की गवाही देते हैं। वे उनके सर्व-सुंदर नामों के अर्थ को प्रदर्शित करते हैं (20:8)।

तो, हे अभागे, हठी और असावधान! तुम इस महान सत्य की व्याख्या कैसे कर सकते हो या इस असीम चमत्कारी और अद्भुत स्थिति की व्याख्या कैसे कर सकते हो? तुम इन असाधारण कलाओं का श्रेय किसको दे सकते हो?

इस धरती जितनी चौड़ी खिड़की पर तुम लापरवाही का कौन-सा पर्दा खींचकर उसे बंद कर सकते हो?

क्या यह आपका संयोग और संयोग है? आपका अचेतन साथी, जिस पर आप भरोसा करते हैं और जिसे आप "सत्य" कहते हैं, कहाँ है, जो आपका मित्र और गुमराही में आपका सहारा है? क्या गया-संयोग और संयोग का होना बिलकुल असंभव नहीं है?

क्या इन मामलों में किसी का हाथ है? क्या यह अकल्पनीय नहीं है

क्या प्रकृति को इन चीज़ों को व्यवस्थित करने का एक छोटा सा अंश भी देना चाहिए? या क्या निर्जीव, अज्ञानी, अचेतन प्रकृति में प्रत्येक चीज़ के भीतर मशीनें और प्रिंटिंग प्रेस हैं, जो प्रत्येक चीज़ से बनी हैं, और मात्रा में अलग-अलग चीज़ों की संख्या के बराबर हैं?

अठारहवीं खिड़की

> क्या वे कभी आकाश और पृथ्वी के आंतरिक आयाम और परमेश्वर के पूर्ण प्रभुत्व पर विचार नहीं करते?
>
> उन पर? (7:185)

ट्वेंटी-सेकंड वर्ड में बताई गई निम्नलिखित तुलना पर विचार करें: एक महल जैसा एक परिपूर्ण, अच्छी तरह से डिज़ाइन

किया गया और कलात्मक निर्माण एक परिपूर्ण कार्य, यानी निर्माण के एक कार्य को इंगित करता है। एक परिपूर्ण, अच्छी तरह से किया गया कार्य एक परिपूर्ण अभिनेता, एक कुशल मास्टर-बिल्डर को इंगित करता है। एक कुशल मास्टर-बिल्डर का शीर्षक एक परिपूर्ण विशेषता, एक कलात्मक क्षमता को इंगित करता है। एक परिपूर्ण विशेषता, एक कला में एक परिपूर्ण योग्यता एक परिपूर्ण क्षमता के अस्तित्व को इंगित करती है। एक परिपूर्ण क्षमता या क्षमता एक महान आत्मा, एक श्रेष्ठ प्राणी के अस्तित्व को इंगित करती है।

इसी तरह, पृथ्वी और ब्रह्मांड को भरने वाले हमेशा नवीनीकृत, ताज़ा और पुनःस्थापित कार्य पूर्ण डिग्री के कार्य दिखाते हैं। असीम रूप से बुद्धिमान और सुव्यवस्थित प्रणाली में होने वाले वे कार्य, एक एजेंट या अभिनेता को पूर्ण शीर्षक और नाम के साथ दिखाते हैं। बस

जैसे सुव्यवस्थित और बुद्धिमानी से किए गए कार्यों को करने के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता होती है, वैसे ही असीम रूप से परिपूर्ण उपाधियाँ, बदले में, उस व्यक्ति की असीम रूप से परिपूर्ण विशेषताओं की ओर संकेत करती हैं। यह व्याकरण का भी एक नियम है - (अरबी) व्याकरण के अनुसार, संज्ञाओं की उत्पत्ति विशेषण से होती है। परिपूर्ण विशेषताएँ परिपूर्ण व्यक्तिगत क्षमताओं की ओर संकेत करती हैं, और परिपूर्ण संभावनाएँ पूर्णता की असीम डिग्री वाले व्यक्ति की ओर संकेत करती हैं।

इस प्रकार, चूँकि कला का प्रत्येक कार्य और ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी परिपूर्ण हैं, और चूँकि प्रत्येक एक कार्य का साक्ष्य देता है, कार्य एक नाम का, नाम एक गुण का, गुण एक संभाव्यता का, और संभाव्यता एक अस्तित्व का, तो - साथ ही साथ वे सभी एक ही निर्माता की आवश्यक सत्ता और अपनी संख्या में एकता की गवाही देते हैं - समग्र रूप से वे ईश्वर के ज्ञान की एक सीढ़ी का निर्माण करते हैं, जो प्राणियों की श्रृंखला जितनी मजबूत एक रूप में ईश्वर तक ले जाती है, और श्रृंखलाबद्ध सत्य का प्रमाण है जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता।

तो हे बेचारे, लापरवाह काफिर, क्या तुम इस प्रमाण को तोड़ सकते हो जो प्राणियों की जंजीर जितना मजबूत है? क्या तुम इस खिड़की को बंद कर सकते हो जिसमें सत्य की किरणें दिखाने के लिए प्राणियों की संख्या जितनी ही खुली जगहें हैं? तुम इस पर लापरवाही का कौन सा पर्दा डाल सकते हो?

उन्नीसवीं खिड़की

> सातों आकाश और धरती और जो कुछ उनमें है, सब उसकी स्तुति करते हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा से उसकी स्तुति न करती हो। (17:44)

इस आयत के अर्थ के अनुसार, सर्वशक्तिमान निर्माता ने आकाशीय पिंडों को ज्ञान और अर्थ के इतने उदाहरण दिए हैं कि मानो अपनी महिमा और कृपा को व्यक्त करने के लिए उसने आकाश को सूर्य, चंद्रमा और सितारों से सजाया है। उसने वायुमंडल में मौजूद प्राणियों को भी ज्ञान और अर्थ के ऐसे उदाहरण दिए हैं मानो वह वायुमंडल को बिजली, गरज और बारिश की बूंदों जैसे शब्दों में बोलना सिखा रहा हो। वह अपनी संपूर्ण बुद्धि और अपनी दया की सुंदरता भी सिखाता है।

जिस तरह वह धरती को पौधों और जानवरों की तरह सार्थक शब्दों में बोलने में सक्षम बनाता है, और इस तरह ब्रह्मांड को अपनी कला की पूर्णता दिखाता है, उसी तरह वह पौधों और पेड़ों को पत्तियों, फूलों और फलों के शब्दों में बोलने में सक्षम बनाकर अपनी कला की पूर्णता और अपनी दया की सुंदरता को भी दिखाता है। फूलों और फलों को बीजों और पराग के शब्दों में बोलने में सक्षम बनाकर, वह सचेत प्राणियों को अपनी कला और अपने प्रभुत्व की पूर्णता की सूक्ष्मता सिखाता है। महिमा के इन अनगिनत शब्दों में से, हम उस तरीके पर विचार करेंगे जिस तरह से एक फूल या एक फूल अपनी कला और अपनी प्रभुता की पूर्णता को दर्शाता है।

गेहूँ की बाली अपनी महिमा व्यक्त करती है और जानें कि वह किस प्रकार गवाही देती है।

प्रत्येक पौधा और वृक्ष अपने रचयिता को अनेक भाषाओं में इस तरह प्रदर्शित करता है कि देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते हैं और उन्हें यह कहने पर मजबूर कर देते हैं, “परमेश्वर सर्व-महिमावान है, यह कितनी उत्कृष्ट गवाही देता है।” प्रत्येक पौधे की महिमा, जब वह खिलता है और कोंपलें और बालियाँ उगाता है - वह समय जब वह मुस्कुराकर बोलता है - वह अपने आप की तरह ही सुंदर और स्पष्ट है-

सभी फूलों की बोली में, अच्छी तरह से विकसित की गई बालियों या कानों की भाषा में, और अच्छी तरह से विकसित बीजों और अच्छी तरह से बने अनाजों के शब्दों में व्यक्त ज्ञान या उद्देश्यपूर्णता को प्रदर्शित करने वाला क्रम या प्रणाली पूरी तरह से मापा और संतुलित है, जो स्पष्ट रूप से ज्ञान की ओर इशारा करता है। संतुलन या माप कला के डिजाइन में है, जो कला में कौशल को दर्शाता है, और कला का डिजाइन अनुग्रह और उदारता दिखाने वाले श्रृंगार में है। श्रृंगार दया और परोपकार दिखाने वाली सुखद सुगंधों में है। चीजों की ये अर्थपूर्ण अवस्थाएँ, एक दूसरे के भीतर, गवाही की ऐसी भाषा बनाती हैं कि वे अपने राजसी निर्माता को उसके नामों से परिभाषित करती हैं, उसके गुणों के साथ उसका वर्णन करती हैं, उसके नामों की अभिव्यक्तियों का उदाहरण देती हैं, और उसके प्यार और पहचाने जाने को व्यक्त करती हैं।

एक फूल से ऐसी गवाही सुनकर, यदि आप पृथ्वी पर भगवान के सभी उद्यानों में सभी फूलों की आवाजें सुन सकते हैं और देख सकते हैं कि वे किस शक्तिशाली ढंग से राजसी निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की घोषणा करते हैं, तो आपके पास कोई प्रश्न, संदेह और संकोच कैसे शेष रह सकता है?

एक पेड़ को देखो और उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति देखो—
कैसे वसंत में इसके पत्ते नियमित रूप से दिखाई देते हैं, इसके फूल समानुपातिक रूप से खिलते हैं, इसके फल बुद्धि और दया से बढ़ते और पकते हैं, और पूरा पेड़ हवा के झोंके पर नाचता है। फिर पत्तियों के माध्यम से व्यक्त बुद्धिमान क्रम में सटीक संतुलन पर विचार करें-

उदारता के हाथ से हरे रंग में, और फूलों की जीभ अनुग्रह की खुशी के साथ मुस्कुराती है, और फलों के शब्द दया के प्रदर्शन के साथ मुस्कुराते हैं।

इसके अलावा, तराजू के भीतर की नाजुक कलाओं और डिजाइनों पर गौर करें जो सटीक माप को प्रदर्शित करते हैं; और कुशलता से बनाए गए डिजाइनों और अलंकरणों के भीतर अलग-अलग स्वाद और सुखद सुगंधें जो दया और परोपकार को दर्शाती हैं, और बीज और पत्थर, जिनमें से प्रत्येक सुखद सुगंध और मीठे स्वाद में शक्ति का एक चमत्कार है। देखें कि कैसे ऐसे तथ्य एक सर्वज्ञ, सर्व-उदार, सर्व-दयालु, सर्व-उपकारी निर्माता, वरदानों के दाता, सर्व-सुंदर, उत्कृष्ट बनाने वाले, और उनकी दया की सुंदरता और उनके प्रभुत्व की पूर्णता के आवश्यक अस्तित्व और एकता को सबसे स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। यदि आप सभी पेड़ों की सभी भाषाओं को सुन सकते, तो आप देख सकते कि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है, उसके खजाने में कितने सुंदर रत्न हैं जो परमेश्वर की महिमा करते हैं (61: 1)।

तो, हे अभागे असावधान, जो अपने आपको कृतघ्नता में अपने हाल पर छोड़ देना चाहता है! यदि तुम उस सर्व-दयालु महापुरुष को पहचानना नहीं चाहते, जो स्वयं को तुम्हारे सामने प्रकट करता है और चाहता है कि तुम उससे इतनी सारी भाषाओं में प्रेम करो, तो इन भाषाओं को चुप करा देना चाहिए। लेकिन चूँकि उन्हें चुप नहीं कराया जा सकता, इसलिए तुम्हें उनकी बात सुननी चाहिए। केवल अपने कान बंद कर लेने से तुम उनसे बच नहीं पाओगे, क्योंकि ब्रह्मांड बोलना बंद नहीं करता और प्राणी बोलना बंद नहीं करते।

चुप नहीं कराया जा सकता। ईश्वरीय एकता के साक्षी होने के नाते, उन्हें चुप नहीं कराया जा सकता; निश्चित रूप से, वे आपकी निंदा करेंगे।

बीसवीं विंडो2

पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा शासन है। (36:83)

कुछ भी नहीं है, बस उसके ख़ज़ाने हमारे पास हैं और हम

2 इस बीसवीं खिड़की में जो सत्य है वह एक बार अरबी में मेरे सामने इस प्रकार आया:

प्रकाश की चमक आपके प्रकाश से है
और उसके द्वारा बातें ज्ञात कराना;
लहरों में हवाओं की गति के माध्यम से होता है
आपका उन्हें भेजना और नियोजित करना।
तू महिमावान है, तेरा शासन कितना शक्तिशाली है!
नदियों का फूटना और बहना जारी है
आप उन्हें संग्रहीत कर रहे हैं और उन्हें अपने अधीन कर रहे हैं।
पत्थरों का निर्माण और सजावट किसके माध्यम से होती है?
आप उन्हें व्यवस्थित कर रहे हैं और उन्हें आकार दे रहे हैं।
हे सर्व-महिमावान हो आप, आपकी बुद्धि कितनी
अद्वितीय और शानदार है!
फूलों की मुस्कुराहट आपके श्रृंगार से है
और उन्हें सुन्दर बनाना।
भव्यता से फल का उद्भव होता है
आपका दान और अनुग्रह.
आप सर्व-महिमावान हैं, आपकी कला कितनी सुंदर है!
पक्षियों का गाना आपके द्वारा उन्हें बनाने के कारण है
एक दूसरे से बात करें और संवाद करें।
वर्षा का गान आपके भेजने से होता है
इसे नीचे करो, तुम्हारा वरदान।
हे परमेश्वर, तू महिमावान है, तेरी दया कितनी विशाल है!
चन्द्रमाओं की गति आपके निर्धारण, व्यवस्था, निर्देशन और प्रकाशन से होती है।

तू महिमावान है! तेरे प्रमाण कितने उज्ज्वल हैं! तेरे प्रमाण कितने स्पष्ट हैं!

> इसे नीचे न भेजें, बल्कि एक उचित, निर्धारित माप के साथ भेजें।
> हम ही हवाएँ भेजते हैं ताकि खाद डालें, फिर हम ही आकाश से पानी बरसाते हैं और उसे तुमको पिलाते हैं, तुम उसके भण्डार के रखवाले नहीं हो। (15:21-22)

जिस तरह से संपूर्ण बुद्धि और कला की सुंदरता और अनुग्रह सृष्टि में विशेष रूप से, परिणामों और विवरणों में स्पष्ट होते हैं, उसी तरह सार्वभौमिक तत्व भी, जो भ्रमित होने के साथ-साथ यादृच्छिक और संयोग से प्रतीत होते हैं, बुद्धि और कला द्वारा निर्देशित स्थिति ग्रहण करते हैं। इस प्रकार, जैसा कि इसके अन्य बुद्धिमान कर्तव्यों से संकेत मिलता है, प्रकाश अपने प्रभु की अनुमति से पृथ्वी पर ईश्वर के प्राणियों को दिखाने और उजागर करने के लिए चमकता है। अर्थात्, प्रकाश का उपयोग एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा किया जाता है; वह इसका उपयोग इस दुनिया के बाजार में अपनी अनूठी कलाओं को प्रदर्शित करने के लिए करता है।

हवाओं पर विचार करें: जैसा कि उनके अन्य महान और बुद्धिमान लाभों और कार्यों में देखा गया है, वे असंख्य, महत्वपूर्ण कर्तव्यों को पूरा करने के लिए दौड़ती हैं। इस प्रकार, उनकी लहर जैसी हरकतें दर्शाती हैं कि उन्हें एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता द्वारा नियोजित, भेजा और उपयोग किया जाता है। वे भगवान के आदेशों को तेजी से पूरा करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

अब झरनों, झरनों और नदियों पर विचार करें! उनका धरती और पहाड़ों से फूटना संयोग से नहीं हुआ है। बल्कि, उनके लाभ और उपयोग, ईश्वरीय दया के कार्य, ज़रूरत के हिसाब से पहाड़ों में उनका भंडारण और बुद्धि के अनुसार उनका भेजा जाना यह दर्शाता है कि एक सर्वज्ञ प्रभु ने उन्हें अपने अधीन करके रखा है और उन्हें अपने आदेशों के अनुसार फूटने दिया है।

अब विभिन्न प्रकार के पत्थरों, रत्नों और खनिजों पर विचार करें! उनके पास बुद्धिमानीपूर्ण विशिष्ट उद्देश्य और लाभ हैं और उन्हें मानव और पशु की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए व्यवस्थित किया गया है।

इससे पता चलता है कि एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता ने उन्हें सजाया, व्यवस्थित, संगठित और आकार दिया है, और उन्हें उनके विशेष, लाभकारी गुण प्रदान किए हैं।

अब फूलों और फलों पर विचार करें! मुस्कुराहट, रंग, स्वाद, सुंदरता, कढ़ाई और सुगंध जो प्रत्येक प्रजाति को उसके लिए विशिष्ट और दूसरों से अलग दी जाती है, वास्तव में एक सर्व-उदार निर्माता, एक दयालु उपहार देने वाले की मेज पर एक निमंत्रण और मेनू है।

अब पक्षियों पर विचार करें! इस बात का निर्णायक प्रमाण कि उनका चहचहाना और चहचहाना एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा उन्हें बोलने के कारण है, वह अद्भुत तरीका है जिससे वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और इन ध्वनियों के साथ एक दूसरे को अपने इरादे व्यक्त करते हैं।

बादल भी अद्भुत होते हैं। बारिश की बूंदों की आवाज़, साथ ही गड़गड़ाहट और बिजली की चमक, निरर्थक नहीं हैं; बल्कि, ये अजीबोगरीब वायुमंडलीय घटनाएँ होती हैं और परिणामस्वरूप, बारिश की बूँदें गिरती हैं और पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को खिलाती हैं, जिन्हें उनकी ज़रूरत होती है और वे उनकी चाहत रखते हैं। इस प्रकार ये घटनाएँ सार्थक और उद्देश्यपूर्ण ज्ञान से भरी होती हैं। एक सर्व-दयालु भगवान के आदेश पर, बारिश उन लोगों को पुकारती है जो इसके लिए तरस रहे हैं: "अच्छी खबर! मैं आ रहा हूँ!"

आकाश को देखो, विशेष रूप से उसमें उपस्थित असंख्य पिंडों में से चंद्रमा को! पृथ्वी के संबंध में उससे जुड़ी ज्ञान की महत्वपूर्ण घटनाएँ -

जिसकी चर्चा रिसाले-ए-नूर में अन्यत्र की गई है—
यह प्रदर्शित करें कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के आदेश पर चलता है।
शक्तिशाली और बुद्धिमान.

प्रकाश से लेकर चंद्रमा तक ये सार्वभौमिक तत्व एक विशाल खिड़की खोलते हैं। वे एक अनिवार्य रूप से विद्यमान एकता, उसकी शक्ति की पूर्णता और उसकी संप्रभुता की भव्यता की घोषणा और प्रदर्शन करते हैं। इसलिए, हे असावधान, यदि तुम इस गड़गड़ाहट की तरह गूंजने वाली आवाज को दबा सकते हो, साथ ही सूर्य के समान तेज इस प्रकाश को बुझा सकते हो, तो ईश्वर को भूल जाओ। अन्यथा, अपने होश में आओ और कहो: वह महिमावान है, जिसकी महिमा सातों आकाश और पृथ्वी और उनमें रहने वाले सभी लोग करते हैं।

इक्कीसवीं खिड़की

> सूर्य अपनी गति के लिए एक निश्चित अवधि तक अपने निर्धारित मार्ग से चलता है, तथा अपनी गति के लिए विश्राम स्थान पर पहुँचता है। यह है अल्लाह का नाप-तौलकर निर्धारित किया हुआ, जो अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, सर्वज्ञ है। (36:38)

सूर्य, ब्रह्मांड का दीपक, ब्रह्मांड के अस्तित्व और एकता के निर्माता पर एक खिड़की है, जो सूर्य की तरह ही चमकदार और दीप्तिमान है। आकार, स्थिति और गति में उनके महान अंतर के बावजूद, बारह ग्रह पूर्ण क्रम, बुद्धि, संतुलन और बिना किसी भ्रम के चलते और घूमते हैं, और एक दूसरे से बंधे हुए हैं।

सूर्य को गुरुत्वाकर्षण नामक दिव्य नियम के माध्यम से निर्देशित किया जाता है, अर्थात वे अपने नेता का अनुसरण करते हैं। यह बड़े पैमाने पर दिव्य शक्ति की भव्यता और भगवान की एकता को दर्शाता है।

जरा कल्पना करें और तुलना करें कि वह शक्ति और बुद्धि कितनी जबरदस्त होगी जो उन निर्जीव पिंडों, उन विशाल, अचेतन पिंडों को असीम रूप से परिपूर्ण क्रम में और असीम रूप से बुद्धिमान संतुलन के साथ और विभिन्न रूपों में और अलग-अलग दूरियों पर घुमाती है। अगर इस विशाल और जटिल घटना में किसी भी हद तक संयोग हस्तक्षेप करता है, तो इससे इतना बड़ा विस्फोट होगा कि ब्रह्मांड टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। अगर यह किसी ग्रह की गति को एक मिनट के लिए भी रोक दे, तो वह ग्रह अपनी कक्षा छोड़कर दूसरे ग्रह से टकरा जाएगा।

पृथ्वी से हजारों गुना बड़े पिंडों के बीच हुई भयानक टक्कर की कल्पना कीजिए।

अन्य ग्रहों के चमत्कारों को ईश्वर के सर्वव्यापी ज्ञान के हवाले करते हुए, हम केवल अपनी पृथ्वी पर विचार करते हैं। यह भगवान के आदेश पर सूर्य के चारों ओर एक लंबी यात्रा करने के लिए बनाई गई है, ताकि एक सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य को पूरा किया जा सके और एक तरह से भगवान की शाही शक्ति और महिमा की भव्यता, दिव्य संप्रभुता की महानता और उनकी दया और बुद्धि की पूर्णता को दर्शाया जा सके।3 भगवान का एक जहाज होने के नाते, यह भगवान के अद्भुत प्राणियों से भरा हुआ है और उनके मनोरंजन के लिए एक चलती जगह की तरह बनाया गया है।

3 इसका वर्णन तीसरे पत्र में किया गया है। सईद नूरसी, द लेटर्स, (द लाइट, इंक., 1998)।

जागरूक सेवकों. चाँद को इसके साथ जोड़ दिया गया है
समय बताने वाली घंटे की सुई जैसी बुद्धिमत्ता के शक्तिशाली उदाहरणों के लिए सटीक गणना के साथ, और इसे यात्रा करने के लिए विभिन्न महल दिए गए हैं। इस धन्य ग्रह के ये पहलू एक सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और एकता को पृथ्वी जितनी ही मजबूत गवाही के साथ साबित करते हैं। आप इससे बाकी सौर मंडल के साथ एक सादृश्य बना सकते हैं।

इसके अलावा, सूर्य को एक चरखे की तरह अपनी धुरी पर घुमाया जाता है ताकि गुरुत्वाकर्षण नामक अमूर्त धागे को एक गेंद में लपेटा जा सके और ग्रहों को उनके साथ बांधा जा सके और उन्हें क्रम में रखा जा सके। एक सिद्धांत कहता है कि सूर्य अपने ग्रहों के साथ बहुत तेज़ गति से नक्षत्र लिरा ("सूर्यों का सूर्य") की ओर बढ़ रहा है। यह स्वयं-स्पष्ट रूप से सर्व-महान व्यक्ति की शक्ति और आदेश, अनंत काल के संप्रभु द्वारा होता है। ऐसा लगता है जैसे वह सौर मंडल को आदेशों के तहत सैनिकों की सेना की तरह घुमाता है, जिससे उसके आधिपत्य की महिमा दिखाई देती है।

तो, हे खगोलशास्त्री, क्या इन मामलों में संयोग का हाथ हो सकता है? मुझे बताओ कि कौन से कारण इन तक पहुँच सकते हैं, कौन सी शक्ति इसके करीब पहुँच सकती है! क्या ऐसा सर्व-महान संप्रभु नपुंसकता प्रदर्शित करेगा और दूसरों को अपनी संप्रभुता में हिस्सा देगा? क्या वह इसे, विशेष रूप से जीवित प्राणियों को, जो ब्रह्मांड के फल, परिणाम, उद्देश्य और मलाई हैं, दूसरे हाथों में देगा? क्या वह दूसरों को हस्तक्षेप करने की अनुमति देगा? क्या वह हमें अपने हाल पर छोड़ देगा, जबकि

हम सबसे व्यापक फल, सबसे उत्तम परिणाम, पृथ्वी पर उनके अतिथि और प्रतिनिधि हैं (जिन्हें उनके नियमों के अनुसार शासन करना चाहिए), और एक दर्पण (उनके नामों को प्रतिबिंबित करने वाले) के रूप में कार्य करते हैं? क्या वह हमें प्रकृति और संयोग पर छोड़ देंगे, जिससे उनकी संप्रभुता की महिमा और उनकी पूर्ण बुद्धि शून्य हो जाएगी?

बाईसवीं विंडो

> क्या हमने धरती को पालना और पहाड़ों को मस्तूल नहीं बनाया? हमने तुमको जोड़े-जोड़े पैदा किए हैं। (78:6-8)

> अल्लाह की दया के निशानों को देखो, कि वह किस प्रकार धरती को उसके मरने के बाद जीवित कर देता है! (30:50)

पृथ्वी एक सिर है, जिसमें असंख्य मुख और असंख्य जीभें हैं, जिनमें से प्रत्येक में असंख्य प्रमाण हैं, जो असंख्य तरीकों से एक सर्वशक्तिमान के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, वह जो सभी चीजों पर सर्वशक्तिमान है और सब कुछ जानता है, तथा उसके पवित्र गुणों और सुंदर नामों की गवाही देते हैं।

हम पृथ्वी की प्रथम रचना और अ-

समझें कि एक चट्टान परत पदार्थ से बनाई गई थी

तरल अवस्था में और मिट्टी की परत चट्टान से बनी थी। अगर यह अपने तरल रूप को बरकरार रखती, तो यह निर्जन होती। अगर यह चट्टान के रूप में, लोहे की तरह कठोर बनी रहती, तो यह हमारे लिए उपयुक्त नहीं होती। और इसलिए हम जानते हैं कि एक सर्व-बुद्धिमान निर्माता की बुद्धि, एक

जो पृथ्वी के निवासियों की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक है, उसने इसे इसका वर्तमान स्वरूप दिया है।

इसके बाद, पहाड़ों को धरती में स्थिर करने के लिए मस्तूलों की तरह गाड़ दिया गया या उन्हें बाहर निकाल दिया गया

पृथ्वी के आंतरिक भाग से, ताकि वे इसके आंतरिक भूकंपों के लिए एक निकास प्रदान कर सकें और यह बिना किसी विक्षेप के अपना कर्तव्य और गति जारी रख सके।

पहाड़ धरती की सतह को समुद्र के आक्रमण से भी बचाते हैं। इसके अलावा, वे जीवित प्राणियों की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए खजाने हैं, हानिकारक गैसों से हवा को शुद्ध करने वाले एयर फिल्टर हैं, पानी का भंडारण करते हैं, और आवश्यक खनिजों के स्रोत हैं। ये सभी तथ्य एक परम शक्तिशाली, सर्व-बुद्धिमान, दयालु व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं।

तो, हे भूविज्ञानी, आप इसे कैसे समझाते हैं? क्या संयोग से यह दिव्य जहाज अद्भुत प्राणियों से भरा हुआ, चमत्कारों का प्रदर्शन बन सकता है? क्या संयोग से यह जहाज अपनी सतह पर व्यवस्थित कुछ भी खोए बिना अविश्वसनीय गति से यात्रा कर सकता है? पृथ्वी के चेहरे पर अद्भुत प्रकार की कला को देखें। देखें कि तत्वों [रासायनिक पदार्थ और वायु, जल, मिट्टी और अग्नि के सार्वभौमिक तत्व] को कितनी बुद्धिमानी से कर्तव्यों का प्रभार सौंपा गया है, वे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ के आदेश पर यहाँ सर्व-दयालु के मेहमानों की कितनी खूबसूरती से देखभाल करते हैं और उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहते हैं!

कला के अनूठे और अद्भुत कार्यों के बीच, पृथ्वी की बहुलता पर कढ़ाई की उन पंक्तियों पर विचार करें।

रंगीन चेहरे जो बुद्धिमत्ता के अद्भुत उदाहरण प्रदर्शित करते हैं।
देखो कि कैसे वह नदियों और झरनों, समुद्रों और नदियों, पहाड़ों और पहाड़ियों को अपने प्राणियों और सेवकों के लिए आवास और परिवहन के रूप में उपयोग करता है। इसके अलावा, पृथ्वी को अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों से परिपूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ आबाद करना, और इसे जीवन से समृद्ध बनाना; और उन निवासियों को मृत्यु के माध्यम से नियमित चक्रों में उनके कर्तव्यों से मुक्त करना, और पुनरुत्थान के अनुरूप तरीके से मृत्यु के बाद इसे नियमित रूप से फिर से भरना और पुनर्जीवित करना, ऐसी असंख्य भाषाएँ हैं जो महामहिम के आवश्यक अस्तित्व और एकता के सर्वशक्तिमान की गवाही देती हैं, एक सर्वज्ञ पूर्णता की।

संक्षेप में, पृथ्वी का मुख उसकी कला के चमत्कारों को प्रदर्शित करता है, यह उत्कृष्ट प्राणियों का एक सभा क्षेत्र है, प्राणियों की सेना के लिए एक मार्ग है, तथा उसके सेवकों के लिए पूजा और निवास का स्थान है। ब्रह्माण्ड के हृदय की तरह होने के कारण, पृथ्वी ब्रह्माण्ड जितनी ही व्यापक दिव्य एकता का प्रकाश दिखाती है।

इसलिए, हे भूगोलवेत्ता! यदि तुम ईश्वर को नहीं पहचानते, जबकि पृथ्वी उसे असंख्य मुखों से, जिनमें असंख्य भाषाएँ हैं, प्रकट करती है, और यदि तुम अपना सिर प्रकृतिवाद के दलदल में डुबाते हो, तो अपनी भूल की सीमा पर विचार करो। इस बात का एहसास करके कि ऐसा करने से तुम्हें कितनी कठोर सजा मिलेगी, अपने होश में आओ। दलदल से अपना सिर उठाओ और कहो, "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, जिसके हाथ में सभी चीज़ों का पूर्ण प्रभुत्व है!"

तेईसवीं खिड़की

उसी ने मृत्यु और जीवन को पैदा किया। (67:2)

जीवन ईश्वरीय शक्ति का सर्वाधिक प्रकाशमान एवं सुन्दर रूप है।

जीवन एक चमत्कार है, दिव्य एकता का सबसे शानदार और सबसे मजबूत सबूत, सबसे व्यापक और चमकदार दर्पण जो हमेशा-से-प्रार्थित सभी को दर्शाता है। जीवन सभी जीवित और आत्मनिर्भर एक को उसके सभी नामों और आवश्यक गुणों के साथ प्रकट करता है, क्योंकि यह कई दिव्य गुणों के एक साथ प्रकट होने से बना एक मिश्रित प्रकाश है, जैसे कि सात रंग प्रकाश में मिश्रित होते हैं और प्राकृतिक मिठाइयों में विभिन्न औषधीय पदार्थ। इसी तरह, जीवन कई दिव्य गुणों के प्रकटीकरण से मिश्रित एक वास्तविकता है जिसके कारण इसमें कई विशेषताएं हैं। इनमें से कुछ विशेषताएं इंद्रियों के माध्यम से विकसित होती हैं और विशिष्ट हो जाती हैं। हालाँकि, उनमें से अधिकांश, भावनाओं, भावनाओं और भावनाओं के माध्यम से खुद को महसूस करते हैं और जीवन के "उबलने" के परिणामस्वरूप प्रकट होते हैं।

जीवन में ईश्वर की कृपा, दया, कृपा और बुद्धि भी शामिल है, जो ब्रह्मांड को बनाए रखने और संचालित करने में सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं। ऐसा लगता है जैसे जीवन उन्हें जहाँ भी जाता है साथ ले जाता है। उदाहरण के लिए, जब जीवन किसी शरीर में प्रवेश करता है, तो सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम भी उसमें प्रकट होता है और पूर्ण बुद्धि के साथ जीवन के उस "घोंसले" का निर्माण और व्यवस्था करता है। सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय नाम बन जाते हैं

उसी क्षण प्रकट होते हैं, उस घोंसले को उसकी ज़रूरतों के अनुसार सुसज्जित और सजाते हैं, और उस जीवन को जारी रखने और उसे परिपूर्ण बनाने के लिए क्रमशः उस पर सभी प्रकार के अनुग्रह प्रदान करते हैं। और, सर्व-प्रदाता नाम जीवन को उसके रखरखाव और उत्कर्ष के लिए आवश्यक भौतिक और आध्यात्मिक पोषण प्रदान करके, साथ ही उसके शरीर में उस पोषण की एक निश्चित मात्रा को संग्रहीत करके स्वयं को प्रकट करता है।

इसका मतलब है कि जीवन एक केंद्र बिंदु की तरह है, जिस पर विभिन्न नाम या गुण मिलते हैं, या यूँ कहें कि एक इकाई बनाने के लिए एक दूसरे में एकजुट होते हैं। ऐसा लगता है जैसे जीवन पूरी तरह से ज्ञान है, साथ ही साथ शक्ति, बुद्धि, दया, इत्यादि भी है। अपने व्यापक स्वभाव के कारण, जीवन ईश्वर की शाश्वत-प्रार्थना का दर्पण है जो ईश्वरीय सत्ता के सार के आवश्यक गुणों को दर्शाता है। नतीजतन, अनिवार्य रूप से अस्तित्व में रहने वाला, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर, जीवन को सबसे बड़ी प्रचुरता में बनाता और दिखाता है। वह जीवन के चारों ओर सभी चीजों को केंद्रित करता है ताकि वे उसकी सेवा करें, क्योंकि जीवन को एक बहुत ही महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपा गया है।

ईश्वर को हमेशा से ही सभी के लिए प्रार्थना करने वाले के रूप में दर्पण बनना आसान नहीं है। असंख्य नए जीवन और आत्माएं, साथ ही जीवन के सार या पहचान, जिन्हें हम लगातार देखते हैं, तुरन्त और शून्य से अस्तित्व में लाए जाते हैं, आवश्यक अस्तित्व, पवित्र गुण और आवश्यक रूप से विद्यमान, सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर के सुंदर नामों को दर्शाते हैं।

एक, जिस तरह प्रकाश की किरणें सूर्य को दिखाती हैं। अगर आप सूर्य को नहीं पहचानते और उसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते, तो आपको दिन में व्याप्त प्रकाश को नकारना होगा। उसी तरह, अगर आप एकता के सूर्य, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर, जीवन देने वाले और मृत्यु का कारण बनने वाले को नकारते हैं, तो आपको इस ग्रह पर सभी जीवित प्राणियों के अस्तित्व को उनके प्रकट होने से लेकर पृथ्वी के अंतिम विनाश तक नकारना होगा। आपको खुद को स्वीकार करना होगा कि आप अचेतन, सबसे अज्ञानी प्राणियों की तरह हैं।

चौबीसवीं खिड़की

> उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, हर चीज़ नाशवान है, सिवा उसके चेहरे के, उसी का राज्य है, और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे (28:88)

मृत्यु जीवन की हद तक ईश्वरीय प्रभुत्व का प्रमाण है, उनकी एकता का एक बहुत मजबूत सबूत है। मृत्यु और जीवन को बनाने वाले **के अर्थ के अनुसार** (67: 2), मृत्यु न तो पूर्ण रूप से अस्तित्वहीन या विलुप्त होने वाली है, न ही इसके रचयिता के बिना पूर्ण विनाश या क्षय है। बल्कि, जैसा कि प्रथम पत्र [पत्रों में] इंगित करता है, यह एक सर्वज्ञ लेखक द्वारा सांसारिक सेवा से मुक्ति है, स्थान का परिवर्तन और शारीरिक नवीनीकरण, कर्तव्यों से मुक्ति, शरीर की कैद से मुक्ति, ज्ञान का एक सुव्यवस्थित कार्य है। जिस तरह धरती का जीवंत चेहरा, साथ ही इसके जीव और चेतन प्राणी, एक सर्वज्ञ निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, उसी तरह वे जीवित प्राणी अपनी मृत्यु के माध्यम से एक सर्व-जीवित, सर्व-

स्थायी एकता और शाश्वतता। जैसे कि इस तरह की बातें बाईसवें वचन में समझाई गई थीं, हम यहाँ केवल निम्नलिखित सूक्ष्म बिंदु को समझाएँगे।

अपने जीवन के माध्यम से, जीवित प्राणी एक अनिवार्य रूप से विद्यमान व्यक्ति के अस्तित्व की गवाही देते हैं; अपनी मृत्यु के माध्यम से, वे एक सर्व-जीवित स्थायी व्यक्ति की अनंतता और एकता की गवाही देते हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी का चेहरा, जो एक जीवित इकाई है, अपनी सभी विशेषताओं और व्यवस्था के माध्यम से निर्माता को दर्शाता है। जब यह सर्दियों के दौरान मर जाती है और एक सफेद कफन से ढक जाती है, तो इसके चेहरे पर हमारा नज़रिया विचलित हो जाता है या वसंत की यह सर्द लाश हमारा ध्यान अतीत की ओर मोड़ देती है और हमारी आँखों के सामने एक व्यापक तमाशा लाती है। दूसरे शब्दों में, सभी पिछले वसंत, जिनमें से प्रत्येक पृथ्वी के चेहरे को ढँकने वाली दिव्य शक्ति का एक चमत्कार है, इस विश्वास को प्रेरित करते हैं कि एक नया वसंत आएगा और पृथ्वी का चेहरा पुनर्जीवित और फिर से भर जाएगा

जीवित प्राणियों के साथ। सभी पिछले वसंत, साथ ही पृथ्वी का चेहरा [जिसने लाखों वर्षों से जीवन और मृत्यु के चक्रों का अनुभव किया है] एक सर्वशक्तिमान निर्माता, एक सर्वशक्तिमान, एक आत्मनिर्भर, स्थायी के आवश्यक अस्तित्व, एकता, स्थायित्व और अनंत काल की गवाही देता है, इतने शानदार ढंग से और दृढ़ता से और इतने विशाल पैमाने पर, और ऐसे स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है, कि कोई मदद नहीं कर सकता है लेकिन घोषणा करता है, "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं, जो एकता में है, अद्वितीय है।"

इस अर्थ के अनुसार वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है, ठीक वैसे ही जैसे यह जीवित पृथ्वी परमेश्वर के अस्तित्व की गवाही देती है।

वसंत के माध्यम से निर्माता, यह अपनी मृत्यु के माध्यम से समय के दो पंखों - अतीत और भविष्य - पर व्यवस्थित दिव्य शक्ति के चमत्कारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करता है। एक वसंत के स्थान पर यह हजारों को दर्शाता है। यह केवल एक के स्थान पर शक्ति के हजारों चमत्कारों की ओर भी इशारा करता है।

उन अतीत के झरनों में से किसी एक की गवाही वर्तमान झरनों की गवाही से अधिक निर्णायक है, क्योंकि सभी अतीत के झरन अपने स्पष्ट कारणों के साथ लुप्त हो चुके हैं, तथा उनके स्थान पर अपने जैसे नए झरनों ने ले ली है।

इससे पता चलता है कि प्रत्यक्ष कारणों का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर उन्हें बनाता है और नष्ट करता है। हालाँकि, वह अपनी बुद्धि के कारण उन्हें कुछ कारणों पर निर्भर बनाता है। जहाँ तक धरती के जीवंत चेहरों की बात है, जो आने वाले समय में क्रम से व्यवस्थित होंगे, उनकी गवाही भी अधिक सशक्त है, क्योंकि वे तब बनाए जाएँगे जब उनका कोई चिह्न नहीं होगा। प्रत्येक मूल होगा और निश्चित कर्तव्यों के लिए भेजे जाने के बाद, हटा दिया जाएगा।

तो हे प्रकृतिवाद के दलदल में डूबे हुए असावधान, अतीत और भविष्य को जानने वाले बुद्धिमान और शक्तिशाली हाथ के बिना कोई चीज पृथ्वी के जीवंत चेहरे पर कैसे हस्तक्षेप कर सकती है? क्या संयोग और प्रकृति, जो तुम्हारे समान तुच्छ हैं (सृजन, पालन और मृत्यु के संबंध में) इसमें हाथ रख सकते हैं? यदि तुम इस दलदल से मुक्त होना चाहते हो, तो कहो, "प्रकृति ईश्वरीय शक्ति की एक नोटबुक से अधिक कुछ नहीं है, और संयोग एक छिपी हुई ईश्वरीय बुद्धि का पर्दा है जो हमारी अज्ञानता को छुपाता है," और सत्य के करीब जाओ।

पच्चीसवीं खिड़की

कला का एक काम एक कलाकार को दर्शाता है। किसी चीज के पैदा होने के लिए जन्म देने वाली किसी चीज के अस्तित्व की आवश्यकता होती है। किसी चीज के नीचे होने का मतलब है कि कोई चीज ऊपर है, इत्यादि। जैसे सभी सापेक्ष चीजें या गुण एक दूसरे के संबंध में मौजूद होते हैं और एक दूसरे के अस्तित्व की आवश्यकता होती है, वैसे ही सभी चीजों की आकस्मिकता, चाहे वह विशेष हो या संपूर्ण, आवश्यकता को दर्शाती है, क्योंकि किसी चीज का अस्तित्व में होना या न होना समान रूप से संभव है। पूरे ब्रह्मांड में देखे जाने वाले अस्तित्व या बनने या क्रियाशील होने से गतिविधि दिखती है। उनका बनाया जाना सृजन की गतिविधि को दर्शाता है। उनकी देखी गई बहुलता और संरचना एकता को अनिवार्य बनाती है।

आवश्यकता, कार्य, करना, सृजन और एकता आवश्यक, सक्रिय, सृजनात्मक और एक होने के गुणों की मांग करते हैं, जो सभी आकस्मिक, निष्क्रिय, बहुविध, संयोजित और निर्मित नहीं हैं। इसे देखते हुए, ब्रह्मांड में सभी आकस्मिकताएं, क्रियाएं, संरचनाएं, रचनाएं, बहुलताएं और संयोजन एक अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक की गवाही देते हैं, जो अपनी इच्छानुसार कार्य करता है, सभी चीजों का निर्माता, एक और अद्वितीय।

संक्षेप में, आकस्मिकता आवश्यकता को दर्शाती है, होना या बनना करने या बनाने की क्रिया को इंगित करता है, और बहुलता एकता को इंगित करती है। उसी तरह, बनाया जाना और प्रदान किया जाना, जैसा कि अस्तित्व में देखा जाता है, बनाने, बनाने और प्रदान करने की क्रियाओं के अस्तित्व को इंगित करता है। ये, बदले में, एक के अस्तित्व को इंगित करते हैं

सर्व-करुणामय निर्माता, जो सृष्टिकर्ता और सर्व-प्रदाता है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक प्राणी, अपनी सैकड़ों विशेषताओं की भाषाओं के माध्यम से, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के सैकड़ों सुंदर नामों की गवाही देता है। यदि यह स्वीकार नहीं किया जाता है, तो ऐसी सभी विशेषताओं को भी अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए

छब्बीसवीं खिड़की4

ब्रह्मांड में जीवों में देखी जाने वाली सुंदरता और सौन्दर्य एक निश्चित अवधि के लिए दिखाई देते हैं और फिर गायब होने के बाद फिर से नए और तरोताजा हो जाते हैं। इससे पता चलता है कि वे एक शाश्वत सौंदर्य की अभिव्यक्ति के प्रतिबिंब हैं। जिस तरह नदी की सतह पर बुलबुले के झुंड की चमक से पता चलता है कि बुलबुले दर्पण हैं

समय की बहती नदी में यात्रा करने वाले प्राणियों पर चमकती हुई सौंदर्य की किरणें स्थायी सौंदर्य की ओर संकेत करती हैं और उसके लक्षण हैं।

ब्रह्माण्ड के हृदय में निहित सच्चा प्रेम

यह कभी न खत्म होने वाले प्रियतम को भी दर्शाता है। जैसे कि पेड़ की प्रकृति में जो कुछ भी मौजूद नहीं है, उसका उसके फलों में कोई स्थान नहीं है, मानवता में मौजूद गंभीर, पारलौकिक प्रेम, सृष्टि के वृक्ष का सबसे संवेदनशील और नाजुक फल, यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड में सच्चा प्रेम मौजूद है, हालांकि विभिन्न रूपों और विभिन्न प्रकारों में।

ब्रह्माण्ड के हृदय में ऐसा सच्चा प्रेम एक शाश्वत, प्रियतम को दर्शाता है।

4 यह खिड़की हृदय और प्रेम से परिपूर्ण लोगों से संबंधित है।

ब्रह्मांड की गोद में प्रकट होने वाले आकर्षण, आकर्षण और आसक्ति सभी सतर्क और जागरूक दिलों को दिखाते हैं कि वे एक आकर्षक, शाश्वत सत्य की आकर्षण से निकलते हैं। इसके अलावा, संत लोग और वे लोग जो सृष्टि में छिपे हुए सत्यों को उजागर कर सकते हैं, जो प्राणियों के सबसे संवेदनशील और प्रबुद्ध समूह का गठन करते हैं, सर्वसम्मति से रिपोर्ट करते हैं कि उन्हें महामहिम की अभिव्यक्तियों में से एक सर्व-सुंदर एक प्राप्त होता है और वे अपने प्रकाश और दर्शन के माध्यम से जानते हैं कि महामहिम सुंदर एक खुद को जाना और प्यार करता है। यह एक आवश्यक के अस्तित्व की गवाही देता है-

वह सर्वगुण संपन्न, सर्वसुंदर और महामहिम है, तथा मनुष्यों द्वारा स्वयं को ज्ञात करने के लिए है। साथ ही, ब्रह्मांड और प्राणियों के चेहरे पर काम करने वाली सुंदरता और सजावट की कलम उस कलम के मालिक के नामों की सुंदरता को दर्शाती है।

इस प्रकार ब्रह्माण्ड अपने चेहरे के सौंदर्य, अपने हृदय के प्रेम, अपने वक्षस्थल के आकर्षण, अपनी आंखों के प्रकाश और दूरदर्शिता तथा अपनी सर्वव्यापी सजावट और मनोहरता के माध्यम से एक सुखद, स्पष्ट खिड़की खोलता है।

जो बुद्धि और हृदय सजग और जागृत हैं, उनके लिए यह एक सर्वसुन्दर, महिमावान, कभी न समाप्त होने वाला प्रियतम, आराधना का एक शाश्वत उद्देश्य प्रदर्शित करता है -

जिनके सभी नाम सुन्दर हैं।

अतः हे अविवेकी मनुष्य, जो भौतिकता और मोह के अंधकार में, घुटन भरे संदेहों और अटकलों में संघर्ष कर रहा है, होश में आ! इस प्रकार ऊपर उठो कि-

मानवता के लिए उपयुक्त बनें और इन द्वारों से होकर देखें। एकता की कृपा और सुंदरता देखें, पूर्ण विश्वास प्राप्त करें और एक सच्चे इंसान बनें।

सत्ताईसवीं खिड़की

> अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करनेवाला है, और वह हर चीज़ का रक्षक, निगरानी करनेवाला है। (39:62)

ब्रह्मांड में दृश्यमान चीज़ों के साथ-साथ कारणों और प्रभावों को देखते हुए, हम देखते हैं कि सबसे बड़ा कारण - अपने आप में - सबसे तुच्छ चीज़ को भी अस्तित्व में नहीं ला सकता। इस प्रकार कारण केवल एक पर्दा है, क्योंकि कोई तो होना ही चाहिए जो प्रभावों (चीज़ों) को अस्तित्व में लाता है। असंख्य प्राणियों में से, मनुष्य की स्मृति क्षमता पर विचार करें, जो किसी व्यक्ति के सिर में सरसों के दाने के आकार के स्थान पर स्थित होती है। अपने छोटे आकार के बावजूद, यह इतनी व्यापक है कि इसमें एक किताब, या बल्कि एक पुस्तकालय होता है, जिसमें उसका पूरा जीवन इतिहास दर्ज होता है।

आप ईश्वरीय शक्ति के उस चमत्कार के मूल के रूप में किस कारण को प्रस्तुत कर सकते हैं? मस्तिष्क की उलझी हुई नसें? कोशिका के सरल, अचेतन भाग? संयोग की हवाएँ? वास्तव में, कला का वह चमत्कार केवल एक ऐसे व्यक्ति का काम हो सकता है, जो एक सर्वज्ञ निर्माता है, जो हमें इस दुनिया में हमारे द्वारा किए गए कार्यों की याद दिलाने के लिए, हमारे कर्मों के रजिस्टर की प्रतिलिपि बनाता है और इसे हमारी बुद्धि को देता है।

स्मृति के रूप में.

सभी अंडों, बीजों और फलों की गुठलियों की तुलना अपनी स्मृति से करें और फिर अन्य सभी प्रभावों की तुलना शक्ति के इन छोटे-छोटे चमत्कारों से करें। आप जिस भी प्रभाव या चीज़ को देखेंगे, आप देखेंगे कि उसमें ऐसी अद्भुत कला-कौशलता है कि अगर सिर्फ़ उसका अपना कारण ही नहीं बल्कि सभी कारण एक साथ आ जाएँ, तो वे उसके सामने अपनी शक्तिहीनता प्रदर्शित करेंगे। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि सूर्य, जिसे कुछ लोग एक बहुत बड़ा कारण या कारक मानते हैं, सचेतन है और उसमें इच्छाशक्ति है, अगर आप उससे एक मक्खी का शरीर बनाने के लिए कहें, तो वह स्पष्ट रूप से उत्तर देगा, "मेरे निर्माता की कृपा से, मेरी दुकान में बहुत अधिक प्रकाश और गर्मी और कई रंग हैं। हालाँकि, एक मक्खी के शरीर में आँखें, कान, जीवन और अन्य चीज़ें हैं जो मेरी दुकान या मेरी क्षमता में नहीं हैं।"

किसी वस्तु की अद्भुत कला और सजावट कारणों का खंडन करती है (जो उसके निर्माण का कारण है) और अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता, सभी कारणों के निर्माता की ओर संकेत करती है -
उसी की ओर सारा मामला लौटा दिया जाता है (11:123) और उसी को सभी चीज़ों और घटनाओं का सच्चा रचयिता मान लो। इसी तरह चीज़ों से जुड़े परिणाम, उद्देश्य और लाभ बताते हैं कि वे एक अत्यन्त दयालु, अत्यन्त बुद्धिमान रब के काम हैं जो कारणों के पर्दे के पीछे काम करता है।

चूंकि अचेतन कारण किसी उद्देश्य का पीछा नहीं कर सकते, तो हम इस तथ्य की व्याख्या कैसे कर सकते हैं कि प्रत्येक प्राणी कई निश्चित उद्देश्यों और लाभों के लिए अस्तित्व में आता है,

और बहुत सी बुद्धिमता की मिसालों के अनुसार? इसका जवाब सिर्फ़ यही है कि एक अत्यन्त बुद्धिमान और अत्यन्त कृपालु प्रभु उन्हें अस्तित्व में लाता है, और उन लाभों को उनके अस्तित्व का कारण बनाता है।

बारिश के आने पर विचार करें। बारिश के स्पष्ट कारणों में जानवरों के लिए कोई विचार या चिंता नहीं है।

इसलिए इसे एक दयालु निर्माता की बुद्धि के माध्यम से जानवरों की मदद करने के लिए भेजा जाता है जो बनाता है और फिर उन्हें प्रदान करता है। बारिश को "दया" कहा जाता है, क्योंकि यह दया के कई परिणाम लाती है और कई लाभ लाती है। ऐसा लगता है जैसे दया बारिश की बूंदों में सन्निहित है और बूंदों में गिरती है।

सभी सजे हुए पौधों और जानवरों में दिखावटीपन और अलंकरण, जो सभी प्राणियों पर मुस्कुराते हैं, एक राजसी प्राणी के आवश्यक अस्तित्व और एकता की ओर भी इशारा करते हैं और उस एक की ओर भी जो अदृश्य के पर्दे के पीछे, उस अलंकरण और अलंकरण के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करना चाहता है। यह सब खुद को ज्ञात और प्यार करने के गुणों की ओर इशारा करता है, जो बदले में, एक सर्वज्ञ, सर्व-प्रेमी और सर्व-शक्तिशाली निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है।

संक्षेप में, कारण, प्रभाव (चीजें) की तुलना में असीम रूप से साधारण और महत्वहीन हैं, जो कला से भरपूर और मूल्यवान हैं। तो सृजन में उनका कोई वास्तविक हिस्सा कैसे हो सकता है? साथ ही, चीजों के लाभ और उनके माध्यम से और उनके लिए किए जाने वाले उद्देश्य, सृजन में कारणों की किसी भी वास्तविक भूमिका को नकारते हैं, क्योंकि वे उनके अस्तित्व को बताते हैं

एक सर्वज्ञ निर्माता की ओर। इसके अलावा, उनकी सजावट और उनके अस्तित्व में आने में स्पष्ट कौशल एक सर्वज्ञ निर्माता की ओर इशारा करते हैं जो अपनी शक्ति को सचेत प्राणियों तक पहुँचाना चाहता है, जो प्यार पाना चाहता है।

हे असहाय, तुम कारणों को देवता मानते हो! तुम इन महत्वपूर्ण वास्तविकताओं को कैसे समझाते हो? तुम अपने आप को क्यों धोखा देते हो? यदि तुम एक विवेकशील प्राणी हो, तो कारणों के पर्दे को फाड़ दो और यह घोषणा करते हुए कि, "वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है," असंख्य भ्रमों से बच जाओ।

अट्ठाईसवीं खिड़की

> उसकी निशानियों में से है आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों में अन्तर।
>
> निस्संदेह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं। (30:22)

हम ब्रह्मांड में एक सर्व-समावेशी ज्ञान और व्यवस्था देखते हैं, शरीर की कोशिकाओं से लेकर दुनिया तक। जब हम शरीर की कोशिकाओं को देखते हैं, तो हम उस व्यक्ति के आदेश और कानून द्वारा एक महत्वपूर्ण संगठन और व्यवस्था देखते हैं जो सभी शारीरिक कार्यों और जरूरतों को देखता और नियंत्रित करता है। जिस तरह शरीर में वसा के रूप में कुछ पोषण संग्रहीत होता है ताकि जरूरत पड़ने पर उसका उपयोग किया जा सके, उसी तरह कोशिकाओं में भी उसी तरह की भंडारण सुविधा होती है। हम पौधों में एक बुद्धिमान संगठन, खेती और नर्सरी भी देखते हैं; जानवरों में एक उदार निर्वाह और प्रजनन; और ब्रह्मांड के स्तंभ जैसे भागों में एक राजसी प्रबंधन और रोशनी, जिनमें से प्रत्येक महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करता है। हम देखते हैं कि दुनिया पूरी तरह से योजनाबद्ध और व्यवस्थित है

ज्ञान और उत्कृष्ट उद्देश्यों के कुछ उदात्त उदाहरणों के लिए एक देश या शहर या महल के रूप में।

जैसा कि बाईसवें वचन के प्रथम चरण में समझाया और तर्क दिया गया है, ये तथ्य ईश्वर के साथ किसी भी भागीदार को जोड़ना असंभव बनाते हैं। सबसे छोटे कण से लेकर सबसे बड़े सितारों तक, सब कुछ आपस में इस तरह से जुड़ा हुआ है और एक दूसरे से इस तरह जुड़ा हुआ है कि जो सितारों को अपने अधीन नहीं कर सकता और उनका प्रबंधन नहीं कर सकता, वह किसी कण पर हावी नहीं हो सकता। साथ ही, जैसा कि बाईसवें वचन के द्वितीय चरण में समझाया और तर्क दिया गया है, जो स्वर्गों का निर्माण नहीं कर सकता और उन्हें एक सटीक क्रम में नहीं रख सकता, वह किसी को भी एक अनूठा चेहरा नहीं दे सकता। जो सभी स्वर्गों का स्वामी नहीं हो सकता, वह किसी व्यक्ति के चेहरे पर स्वर्गीय चिह्न नहीं अंकित कर सकता जो उसे दूसरों से अलग करता है।

यह सब मिलकर ब्रह्मांड जितनी बड़ी खिड़की बनाता है, ताकि अगर हम इसके माध्यम से देखें, तो व्यक्ति और मन की आंखें स्पष्ट रूप से देख सकें कि ईश्वर का अर्थ सभी चीजों का निर्माता है और वह सभी चीजों का संरक्षक, एक पर्यवेक्षक है। आकाश और पृथ्वी की कुंजियाँ उसी की हैं... (39:62-63) ब्रह्मांड के पन्नों पर बड़े अक्षरों में अंकित हैं। जो लोग उन्हें नहीं देखते हैं, उनके पास न तो आँखें हैं और न ही दिल, या वे केवल इंसान लगते हैं।

उनतीसवीं खिड़की

कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी तारीफ़ से उसकी तस्बीह न करे। (17:44)

एक बार वसंत के मौसम में, मैं अकेलेपन के विचारों और भावनाओं के बीच यात्रा कर रहा था। एक पहाड़ी के तल पर, मैंने एक पीले रंग का पेड़ देखा।

जंगली फूल जो मुझे मेरे जैसे ही फूलों की याद दिलाता था

अतीत में मेरे गृहनगर और अन्य स्थानों पर देखा गया। तब मुझे लगा कि उस फूल पर किसकी मुहर लगी है, किसकी मुहर और शिलालेख है, धरती के चेहरे पर सभी समान फूल उसी की मुहर और शिलालेख हैं। इस विचार ने इस विचार को जन्म दिया कि जिस तरह एक पत्र की मुहर उस व्यक्ति की घोषणा करती है जिसने उसे लिखा और भेजा है, उसी तरह वह फूल सर्व-दयालु की मुहर है, और वह पहाड़ी, जिस पर ऐसे शिलालेख और अर्थपूर्ण पौधों की "पंक्तियाँ" बनाई गई हैं [और उस फूल से मुहर लगाई गई है], उस फूल के निर्माता का एक पत्र है।

यह पहाड़ी भी अपने आप में एक मुहर है और इसके आगे का मैदान दयालु अल्लाह का एक पत्र है।

इन विचारों ने निम्नलिखित सत्य की ओर अग्रसर किया: प्रत्येक वस्तु, प्रभु की मुहर की तरह है, जो सभी चीजों को अपने निर्माता को बताती है और साबित करती है कि यह उसके रचयिता का एक पत्र है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु दिव्य एकता पर एक ऐसी खिड़की बनाती है जो सभी चीजों को एकता के अद्वितीय स्वामित्व के अधीन करती है। यह जीवित चीजों के लिए विशेष रूप से सच है, जिनमें से प्रत्येक में इतनी अद्भुत डिजाइन और चमत्कारी कला होती है कि जो इसे ऐसा बनाता है और इसे इतने सार्थक रूप से डिजाइन करता है, वही सभी चीजों को भी बनाता है।

इसका मतलब यह है कि जो सब कुछ नहीं बना सकता, वह एक चीज भी नहीं बना सकता।

ऐ तुम जो चीज़ों की हक़ीकत से बेख़बर हो, कायनात का चेहरा तो देखो! क्या तुम मख़लूक़ के पन्नों की गवाही को झुठला सकते हो, जो सब के सब उसी के जैसे हैं

अनंत काल से सभी के लिए प्रार्थना करने वाले असंख्य अक्षर, एक दूसरे के भीतर? क्या आप इस बात से इनकार कर सकते हैं कि उन पर लगी मुहरें दिव्य एकता की मुहरें हैं? कौन सी शक्ति उन्हें चुप करा सकती है? यदि आप उनमें से किसी को भी अपने दिल से सुनेंगे, तो आप उसे यह कहते हुए सुनेंगे, "मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।"

तीसवीं खिड़की

> यदि अल्लाह के अतिरिक्त दोनों में कोई पूज्य देवता होते तो दोनों ही नष्ट हो जाते। (21:22)

> हर चीज़ नाशवान है, परन्तु उसका चेहरा। राज्य उसी का है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे (28:88)

यह खिड़की उन धर्मशास्त्रियों के लिए है जो अपने तर्कों को इस तथ्य पर आधारित करते हैं कि सभी चीजें आकस्मिक हैं (बिल्कुल जरूरी नहीं) और समय के साथ अस्तित्व में आई हैं। वे अनिवार्य रूप से अस्तित्व में रहने वाले के अस्तित्व को साबित करने के लिए इसी तरीके का पालन करते हैं। शरहुल-मवाकिफ और शरहुल-मकासिद जैसी विशाल विद्वानों की पुस्तकों का हवाला देते हुए, हम उस खिड़की के माध्यम से कुरान की रोशनी से आत्मा तक आने वाली कुछ किरणों को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करेंगे, इस प्रकार:

अधिकार और संप्रभुता प्रतिद्वंद्विता, साझेदारी या हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देते हैं। यदि किसी गांव में दो नेता हों, तो उसकी व्यवस्था और शांति नष्ट हो जाएगी। एक जिला

या दो राज्यपालों वाले शहर में बहुत भ्रम की स्थिति होगी, और दो राजाओं (या सरकारों) वाले देश में निरंतर उथल-पुथल रहेगी। चूँकि शक्तिहीन लोगों द्वारा प्राप्त पूर्ण अधिकार और संप्रभुता की यह फीकी छाया, जो आत्मनिर्भर नहीं हैं, प्रतिद्वंद्विता और इसके विपरीत के हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, इस बात पर विचार करें कि सर्वोच्च, पूर्ण राज्य और अधिकार के रूप में सच्ची संप्रभुता, जो कि एक पूर्ण शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा प्राप्त दिव्य प्रभुत्व की डिग्री पर है, हस्तक्षेप और भागीदारी को कितनी दृढ़ता से अस्वीकार करती है। दूसरे शब्दों में, भागीदारों के बिना एकता और पूर्ण स्वतंत्रता दिव्यता और प्रभुत्व की सबसे अपरिहार्य और निरंतर आवश्यकता है।

ब्रह्मांड की उत्तम व्यवस्था और सबसे सुंदर सामंजस्य इसकी गवाही देते हैं। मक्खी के पंख से लेकर आकाश के दीपों तक ब्रह्मांड में इतनी उत्तम व्यवस्था है कि हमारा मन इसे पूरी तरह से समझ नहीं सकता। हम बस इतना कर सकते हैं कि हम यह कहकर अपना आश्चर्य और प्रशंसा व्यक्त करें, “सर्व-महिमावान परमेश्वर है! परमेश्वर ने क्या चमत्कार किया है! परमेश्वर इसका भला करे!” और दंडवत करें।

यदि ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने के लिए कोई जगह होती, तो ईश्वर के साथ हस्तक्षेप करने के लिए, यदि ईश्वर के अलावा दोनों में देवता होते, तो दोनों निश्चित रूप से बर्बाद हो जाते (21:22), व्यवस्था नष्ट हो जाती और ब्रह्मांड का रूप और आकार बदल जाता। लेकिन, जैसा कि फिर से देखो में कहा गया है: क्या आप कोई दरार देख सकते हैं? फिर फिर से देखो और फिर से देखो, तुम्हारा

दृष्टि धुंधली और चकाचौंध होकर, और भयभीत और कमजोर होकर आपके पास वापस आएगी (67:3–4), चाहे हम सृष्टि में दोष ढूंढने की कितनी भी कोशिश करें, हमारी निगाहें थकी हुई वापस आएंगी और हमारे दोष खोजने के कारण को सूचित करेंगी, “मैंने व्यर्थ ही अपने आप को थका दिया, क्योंकि इसमें कोई दोष नहीं है।” यह दर्शाता है कि व्यवस्था परिपूर्ण है, जिसका अर्थ है कि यह परिपूर्ण व्यवस्था परमेश्वर की एकता की गवाही देती है।

यह देखते हुए कि ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आया

धर्मशास्त्री तर्क देते हैं कि यह समय में बंधा हुआ है और इसलिए शाश्वत नहीं है:

> दुनिया परिवर्तनशील है। परिवर्तन के अधीन किसी भी चीज़ की शुरुआत होती है, क्योंकि वह समय के भीतर अस्तित्व में आई और समयबद्ध है। जो कुछ भी समय के भीतर अस्तित्व में आया, उसे अस्तित्व में लाने वाला कोई न कोई ज़रूर है। यही वास्तविकता है, इस ब्रह्मांड का एक शाश्वत निर्माता है।

हम कहते हैं:

> ब्रह्मांड की निश्चित रूप से एक शुरुआत है, क्योंकि यह समय के भीतर अस्तित्व में आया। हम देखते हैं कि हर शताब्दी, हर साल, यहाँ तक कि हर मौसम में एक दुनिया एक नए से बदल जाती है। इस प्रकार एक सर्वशक्तिमान महामहिम है जो हर साल, हर मौसम या यहाँ तक कि हर दिन एक नई दुनिया का आविष्कार और निर्माण करता है।

> इसे चेतन प्राणियों को दिखाने के बाद, वह इसे एक नए से बदल देता है। वह इन दुनियाओं को एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनाता है, उन्हें एक श्रृंखला में समय की डोरी से जोड़ता है। एक सर्वशक्तिमान की शक्ति इसे बनाती है

> इस तरह से नवीनीकृत दुनिया की श्रृंखला। वह जो

> क्या इसी ने ब्रह्माण्ड की रचना की है? उसने इस ब्रह्माण्ड और पृथ्वी को उन शक्तिशाली अतिथियों के लिए अतिथिगृह बनाया है।

जहां तक आकस्मिकता का प्रश्न है, धर्मशास्त्री तर्क देते हैं:

> आकस्मिकता का अर्थ है दो संभावनाओं के बीच समानता। यानी, अगर किसी चीज का अस्तित्व में आना या न आना समान रूप से संभव है, तो किसी एक संभावना को प्राथमिकता देने वाला कोई न कोई होना चाहिए, इस प्राथमिकता के अनुसार सृजन करने वाला कोई न कोई होना चाहिए, क्योंकि आकस्मिक प्राणी एक के बाद एक एक दूसरे का सृजन नहीं कर सकते। न ही वे चक्रों में अनंत काल तक वापस जा सकते हैं, जिसमें पहले वाले ने बाद वाले का सृजन किया हो। इसे देखते हुए, एक अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है जो सबका सृजन करता है।

धर्मशास्त्रियों ने सृजनात्मक कारण और प्रभाव की शृंखला, साथ ही क्रमिक रचनाकारों की धारणा को बारह निर्णायक तर्कों के साथ गलत साबित किया है, जिनमें से कुछ को वे "आरोहण में तर्क" और "चरणों में तर्क" कहते हैं। कारण और प्रभाव की शृंखला को तोड़ते हुए, उन्होंने अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व को साबित कर दिया है।

हम कहते हैं: सृष्टि में कारण और प्रभाव की शृंखला या क्रमिक सृष्टिकर्ताओं के चक्र की असंभवता को दर्शाने के बजाय, एक ऐसे सृष्टिकर्ता के आवश्यक अस्तित्व को सिद्ध करने के बजाय, जिसकी कोई शुरुआत नहीं है और जिसने सभी चीजों का सृजन किया है, सभी चीजों के सृष्टिकर्ता से संबंधित हर चीज पर मुहर दिखाना बेहतर और आसान है।

कुरान के ज्ञान के माध्यम से, इस शब्द में सभी शब्द और खिड़कियां इस सिद्धांत का पालन करती हैं।

यद्यपि आकस्मिकता का विषय असंख्य तरीकों से अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए तर्कों की एक विस्तृत श्रृंखला को समाहित करता है, फिर भी इस विषय को धर्मशास्त्रियों द्वारा जिस तरह से व्यवहार किया जाता है, उस तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि, यह अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के ज्ञान के असंख्य तरीके खोलता है। उदाहरण के लिए, जब प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व, विशेषताओं, गुणों और जीवनकाल के संबंध में चुनने योग्य कई संभावनाओं का सामना करने में हिचकिचाती है, तो हम देखते हैं कि वह एक सुव्यवस्थित, सुस्थापित तरीका चुनती है ताकि वह सबसे उपयुक्त शरीर प्राप्त कर सके, और यह अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक गुणों के साथ-साथ अपने जीवन के दौरान अनुभव की जाने वाली सभी अवस्थाओं, स्थितियों और विशेषताओं से सुसज्जित हो। यह उस एक की इच्छा के माध्यम से होता है जो हर चीज को उसकी विशेषताएं प्रदान करता है, उस एक के चुनाव के माध्यम से जो चुनता है, और एक बुद्धिमान निर्माता के निर्माण के माध्यम से जो इसे बुद्धिमानी से निर्देशित करता है

अपने अनोखे तरीके से उद्देश्यों को पूरा करता है।

फिर वह उसे उपयुक्त विशेषताओं और गुणों से सुसज्जित करता है और उसे एक समग्र इकाई का हिस्सा बनाता है, जो उसके सामने संभावनाओं को बढ़ाता है, क्योंकि उसके लिए उस इकाई में हज़ारों तरीकों से जगह पाना समान रूप से संभव है। हालाँकि, उसे सबसे उपयुक्त तरीके से रखा जाता है ताकि वह उससे अपेक्षित उपयोगी और उद्देश्यपूर्ण कर्तव्यों को पूरा कर सके। फिर वह इकाई एक बड़ी इकाई का हिस्सा बन जाती है, जो संभावनाओं को और भी बढ़ा देती है। पहले की तरह, उसे इस तरह रखा जाता है कि वह अपने साथ कई तरह के काम कर सके।

यह अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों को स्पष्ट रूप से बताता है। यह सटीक और निर्णायक रूप से एक सर्वज्ञ निर्देशक के आवश्यक अस्तित्व को प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि चीजें एक सर्वज्ञ प्राधिकरण के आदेश के माध्यम से निर्देशित होती हैं।

एक निजी सैनिक के पास अपने दस्ते, कंपनी, बटालियन, रेजिमेंट, कोर और सेना के संबंध में कुछ कर्तव्य और विशेष रूप से निर्धारित सेवाएं होती हैं, और प्रत्येक के लिए विशिष्ट रूप से व्यवस्थित संबंध होते हैं। इसी तरह, आपकी आंख की पुतली में एक कोशिका का आपकी आंख और फिर आपके सिर, नसों, तंत्रिका तंत्र और पूरे शरीर के साथ एक निश्चित संबंध होता है। इसके पास प्रत्येक के संबंध में बुद्धिमानी से विभाजित कर्तव्य भी हैं। यदि यह अपना न्यूनतम कर्तव्य नहीं निभाता है, तो आप बीमार हो जाएंगे और शरीर को नुकसान होगा।

जिस तरह प्रत्येक प्राणी अपने अस्तित्व, विशेषताओं, शरीर, रूप और गुणों के माध्यम से एक अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की घोषणा करता है, उसी तरह प्रत्येक प्राणी विभिन्न बड़ी और मिश्रित संस्थाओं में स्थित होने पर अन्य भाषाओं में अपने निर्माता की घोषणा भी करता है। प्रत्येक संस्था में अपनी सेवाओं और कर्तव्यों के संबंध में, यह सर्वज्ञ निर्माता के अनिवार्य अस्तित्व, इच्छा और चुनाव की गवाही देता है। केवल मिश्रित संस्थाओं का निर्माता, जो किसी चीज़ को इस तरह से रखता है कि उनके बीच बुद्धिमान संबंध बनाए रखा जा सके, ऐसी चीज़ें कर सकता है। इसका मतलब है कि एक चीज़ हज़ारों भाषाओं में उसकी गवाही देती है। परिणामस्वरूप, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व की ऐसी गवाही ब्रह्मांड में प्राणियों की संख्या से कहीं ज़्यादा है। वास्तव में, वे संभावित संख्या तक पहुँचते हैं

प्रत्येक को सौंपे गए विशिष्ट गुण, विशेषताएं, रूप, पद और कर्तव्य, साथ ही वे जिस समग्र इकाई में स्थित हैं, उसमें उनके संबंध।

तो, तुम जो अनजान हो! तुम कितने बहरे हो कि ब्रह्मांड में व्याप्त इस गवाही को न सुन सको? तुम क्या कहते हो?

इकतीसवीं खिड़की

> हमने मनुष्य को सबसे सुन्दर और सबसे उत्तम ढंग से पैदा किया है। (95:4)

> धरती में भी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सत्य की खोज में हैं और तुम्हारे अपने अंदर भी। तो क्या तुम सत्य को नहीं देखते? (51:20-21)

यह खिड़की मानवता की खिड़की है और उसके अस्तित्व के आंतरिक पहलू से खुलती है। चूंकि कई संत विद्वानों की पुस्तकों में विस्तृत व्याख्याएं उपलब्ध हैं, इसलिए हम केवल कुछ बुनियादी बातों का उल्लेख करेंगे जो हमें कुरान के ज्ञान से प्राप्त हुई हैं। जैसा कि ग्यारहवें वचन और अन्य में समझाया गया है, प्रत्येक मनुष्य (अस्तित्व की) एक ऐसी व्यापक प्रति है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने सभी नामों को व्यक्ति द्वारा उसके स्वयं के माध्यम से अनुभव कराता है। अन्य वचनों का उल्लेख करते हुए, यहाँ हम केवल निम्नलिखित तीन बिंदुओं पर चर्चा करेंगे:

पहला बिन्दु: मनुष्य तीन पहलुओं में दिव्य नामों के दर्पण हैं:

पहला पहलू: जिस तरह रात का अँधेरा प्रकाश का संकेत देता है, उसी तरह सभी लोग अपनी कमज़ोरी और शक्तिहीनता, अभाव और अभाव, अपूर्णता और दोषों के माध्यम से, महामहिम की शक्ति, बल, धन, दया, इत्यादि से युक्त सर्वशक्तिमान की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर के अनेक गुणों का दर्पण बन जाता है। इसके अलावा, अपनी अनंत कमज़ोरी और शक्तिहीनता में असंख्य बाधाओं और शत्रुओं के विरुद्ध एक सहारे की तलाश करते हुए, हमारा विवेक हमेशा अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की ओर मुड़ता है। इसके अलावा, हमारी अनंत विपन्नता और अभाव हमें अपने असंख्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सहायता के एक बिंदु की तलाश करने के लिए मजबूर करते हैं, और इसलिए हमारा विवेक एक सर्व-दयालु, सर्व-धनवान के दरबार का सहारा लेता है, और हम अपनी ज़रूरतों के लिए उससे प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार, सहारे और सहायता के एक बिंदु की हमारी ज़रूरत के संबंध में, प्रत्येक व्यक्ति के विवेक से सर्व-दयालु सर्वशक्तिमान के दया के दरबार में दो छोटी खिड़कियाँ खुलती हैं, जिनके माध्यम से हम उनकी ओर देख सकते हैं।

दूसरा पहलू: हममें से प्रत्येक के पास ईश्वर द्वारा दिया गया विशिष्ट ज्ञान, शक्ति, दृष्टि, श्रवण, स्वामित्व और संप्रभुता है। परिणामस्वरूप, हम ब्रह्मांड के स्वामी और उनके प्रभुत्व की संप्रभुता के पूर्ण ज्ञान, शक्ति, दृष्टि, श्रवण और स्वामित्व (गुणों) के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें समझता है और उन्हें बताता है, उदाहरण के लिए: "मैंने यह घर बनाया है और जानता हूँ कि इसे कैसे बनाना है। मैं इसका मालिक हूँ, देखता हूँ और

इसे प्रबंधित करें। इसलिए ब्रह्मांड के इस विशाल महल को एक निर्माता होना चाहिए जो इसे जानता हो, देखता हो और इसका प्रबंधन करता हो।

तीसरा पहलू: प्रत्येक व्यक्ति अपने ऊपर अंकित दिव्य नामों के दर्पण के रूप में कार्य करता है।

जैसा कि बत्तीसवें वचन के तीसरे चरण की शुरुआत में बताया गया है, हमारे व्यापक स्वभाव में सत्तर से ज़्यादा दिव्य नामों का उल्लेख स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, हमारी रचना निर्माता, सृष्टिकर्ता और रूप देने वाले नामों को प्रकट करती है।

सर्वोत्तम आदर्श और सबसे सुन्दर रचना होने के द्वारा, हम दयालु और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नामों को प्रदर्शित करते हैं।

दयालु। हमारा अच्छा पोषण और पालन-पोषण सर्वशक्तिमान और दयालु नामों को प्रदर्शित करता है। हमारे सभी शारीरिक तंत्र और अंग, अंग और अंग, क्षमताएँ और विशेषताएँ, और इंद्रियाँ और भावनाएँ अलग-अलग दिव्य नामों के अलग-अलग शिलालेख प्रदर्शित करती हैं। जिस तरह दिव्य नामों में सबसे बड़ा नाम है, उसी तरह नामों के शिलालेखों में सबसे बड़ा मानवता है।

यदि आप स्वयं को मानव जानते हैं, तो स्वयं को पढ़ें।
अन्यथा, आप केवल दिखावे के लिए ही मानव बने रहेंगे।

दूसरा बिंदु: यह ईश्वर की एकता के महत्वपूर्ण रहस्य से संबंधित है - उनकी एकता या एक होना, जो कि उनके कुछ नामों के व्यक्तिगत प्राणियों पर केंद्रित अभिव्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित होता है। यह इस प्रकार है:

प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा का उसके शरीर के संबंध में एक एकीकृत कार्य होता है, क्योंकि यह सभी शारीरिक सदस्यों को एक साथ लाती है।

आत्मा, ईश्वरीय इच्छा से जारी ईश्वरीय आदेश का एक सचेतन नियम और ईश्वर द्वारा हम में से प्रत्येक में फूंकी गई एक क्षमता और एक प्रत्यक्ष अस्तित्व में लिपटी हुई, सभी शारीरिक तत्वों से आने वाले संकेतों से भ्रमित नहीं होती है। बल्कि, आत्मा उनकी सभी ज़रूरतों को एक साथ पूरा करती है। दूरी या निकटता अप्रासंगिक हैं, और शारीरिक अंग एक दूसरे को इसके साथ संवाद करने से नहीं रोकते हैं। जब आवश्यक हो, आत्मा किसी एक की मदद करने के लिए अधिकांश शारीरिक तत्वों को भेज सकती है या एक साथ सभी शारीरिक अंगों को हिला सकती है। यह उनमें से किसी के माध्यम से जान, अनुभव और शासन भी कर सकती है। यदि इसने खुद को परिष्कृत और शुद्ध कर लिया है, जिससे पर्याप्त चमक प्राप्त हो गई है, तो यह किसी भी शारीरिक भाग के माध्यम से देख और सुन सकती है।

यह देखते हुए कि आत्मा, ईश्वरीय आदेश का एक कानून है,5
हमारे शरीर में ऐसी क्षमताएँ प्रदर्शित होती हैं - ईश्वर की तुलना सबसे शानदार है - अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता को ब्रह्मांड में अनगिनत क्रियाओं, ध्वनियों और आवाज़ों, आह्वानों और कर्मों से भ्रमित नहीं किया जा सकता है, जो कि स्थूल जगत है। उसकी सार्वभौमिक इच्छा और पूर्ण शक्ति उन सभी से एक साथ और बिना किसी भ्रम के निपटती है, क्योंकि सर्व-महान निर्माता सभी चीज़ों को देखता है और सभी ध्वनियों और आवाज़ों को सुनता है। चूँकि दूरी उसके लिए कोई मायने नहीं रखती, इसलिए वह चाहे तो सभी चीज़ों को एक चीज़ की मदद के लिए भेज सकता है।

---

5 आत्मा का शरीर के लिए वही अर्थ है, जैसे कि, उदाहरण के लिए, विकास का नियम एक पेड़ के लिए है। हालाँकि, आत्मा, ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन से संबंधित सभी दिव्य नियमों के विपरीत, जीवित है, सचेत है, और इसका एक बोधगम्य अस्तित्व है।

तीसरा बिंदु: जीवन का एक महत्वपूर्ण स्वभाव और एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है। चूँकि यह तेईसवीं खिड़की और साथ ही बीसवें पत्र के आठवें वाक्य में विस्तृत रूप से बताया गया है, इसलिए हम यहाँ केवल निम्नलिखित बिंदु को याद करते हैं: जीवन में जटिल इंद्रियों, भावनाओं और भावनाओं के रूप में जो परस्पर जुड़ी हुई कढ़ाईयाँ हैं, वे ईश्वर के कई नामों और कार्यों की ओर इशारा करती हैं, जो सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर ईश्वर के आवश्यक गुणों और कार्यों के स्पष्ट दर्पण हैं। चूँकि ईश्वर और उसमें विश्वास को नकारने वालों के सामने इस मामले पर चर्चा करना उचित नहीं है, इसलिए हम यहाँ रुकते हैं।

तीस सेकंड की विंडो

> वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे। गवाही के लिए अल्लाह ही काफ़ी है। (48:28)

> कह दो, "ऐ लोगो! मैं तुम सबके लिए अल्लाह का रसूल हूँ। आकाशों और धरती का शासन उसी के लिए है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वही जीवन देता है और मारता है।" (7:158)

यह खिड़की पैगम्बर मुहम्मद से बनी है, जो पैगम्बरी के आकाश के सूर्य हैं, वास्तव में, सूर्यों के सूर्य हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। उन्नीसवें और इकतीसवें शब्दों, साथ ही उन्नीसवें पत्र6 में इस बारे में विस्तार से बताने के बाद, हम केवल निम्नलिखित बिंदु पर चर्चा करते हैं:

6 सईद नूरसी, द लेटर्स, (द लाइट, इंक., 1998).

संदेशवाहक और संतत्व के पंखों पर, अर्थात् अपने पूर्ववर्ती सभी पैगम्बरों की पूर्ण सहमति और अपने बाद आने वाले सभी संतों और शुद्ध विद्वानों की सर्वसम्मत सहमति से निर्मित शक्ति से सुसज्जित, पैगम्बर मुहम्मद, जो स्वयं ईश्वरीय एकता के स्पष्ट प्रमाण हैं, ने अपने पूरे जीवन में अपनी पूरी शक्ति के साथ ईश्वरीय एकता की घोषणा और प्रदर्शन किया।

उन्होंने ईश्वर के ज्ञान के लिए एक विस्तृत और उज्ज्वल खिड़की खोली, जिसका नाम है मुस्लिम दुनिया। इमाम अल-ग़ज़ाली, इमाम अर-रब्बानी, मुहीद-दीन इब्नुल-अरबी और अब्दुल-कादिर अल-जिलानी जैसे सैकड़ों हज़ारों शुद्ध, सत्य-खोजी और सच्चे विद्वान इस खिड़की से देखते हैं और दूसरों को इसके ज़रिए ईश्वर के ज्ञान की ओर इशारा करते हैं। क्या ऐसी खिड़की पर पर्दा डालने के लिए कोई पर्दा है? क्या कोई इस खिड़की की आलोचना करने वाला और दूसरों को ईश्वर के ज्ञान की ओर इशारा करने वाला व्यक्ति इस खिड़की से देख सकता है?

क्या इसे नज़रअंदाज़ करना समझदारी नहीं होगी? आप जवाब दीजिए।

तैंतीसवीं खिड़की

> सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसे अनुमति दी-
>
> किसी प्रकार की कुटिलता न करो। (18:1)
>
> अलिफ़ लाम मीम रा. यह किताब हमने तुम्हारी ओर इसलिए भेजी है ताकि तुम लोगों को हर प्रकार के अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। (14:1)

विचार करें कि सभी पिछली खिड़कियाँ कुरान के महासागर की कुछ बूँदें हैं और समझने की कोशिश करें कि ईश्वरीय एकता के कितने प्रकाश, जीवन के जल की तरह हैं,

कुरान में हैं। भले ही आप कुरान पर एक साधारण, सतही नज़र डालें, जो उन सभी पिछली खिड़कियों का स्रोत और खान है, फिर भी यह सबसे चमकदार, चमकदार, व्यापक खिड़की है। यह समझने के लिए कि वह खिड़की कितनी चमकदार और चमकदार है, आप कुरान की चमत्कारिकता के ग्रंथ का संदर्भ ले सकते हैं, जो उन्नीसवें अक्षर का पच्चीसवाँ शब्द और अठारहवाँ संकेत है। सर्वशक्तिमान ईश्वर की दया के सिंहासन से प्रार्थना करते हुए, जिसने हमें कुरान भेजा, हम कहते हैं:

> हमारे प्रभु! अगर हम भूल गए हैं या गलतियाँ की हैं तो हमें जवाबदेह मत बनाइए! हमारे प्रभु! हमारे दिलों को दोष मत दीजिए!
>
> हमारे पालनहार! हमसे दूर हट जाओ। निस्संदेह तू ही सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है। हमारी तौबा स्वीकार कर। निस्संदेह तू ही तौबा को स्वीकार करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।

एक टिप्पणी

मुझे उम्मीद है कि यह तैंतीसवाँ वचन, जिसमें तैंतीस खिड़कियाँ हैं, अविश्वासी को विश्वास स्वीकार करने में मदद करेगा, और यह उस व्यक्ति के विश्वास को मजबूत करेगा जिसका विश्वास कमज़ोर है, और जो अनुकरण पर आधारित मज़बूत विश्वास रखता है, उसे ठोस विश्वास रखने और फिर उस ठोस विश्वास को बढ़ाने में मदद करेगा। मुझे उम्मीद है कि यह विस्तारित विश्वास वाले व्यक्ति को ईश्वर के ज्ञान में प्रगति करने की ओर ले जाएगा, जो सभी प्रकार की सच्ची प्रगति और विकास का स्रोत है, और उसके सामने ज़्यादा चमकदार, ज़्यादा शानदार दृश्य खोलेगा। इस कारण से, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए

एक खिड़की को अपने लिए पर्याप्त समझो, क्योंकि अगर तुम्हारे दिमाग को उसका हिस्सा मिल गया है और उसमें दृढ़ विश्वास आ गया है, तो तुम्हारा दिल भी अपना हिस्सा मांगेगा, और तुम्हारी आत्मा भी। यहाँ तक कि कल्पनाशील क्षमता भी उस प्रकाश से अपना हिस्सा मांगेगी। यही कारण है कि प्रत्येक खिड़की के अपने-अपने लाभ हैं।

पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के स्वर्गारोहण पर ग्रंथ मुख्य रूप से आस्तिक को संबोधित करता है, जबकि भौतिकवादी श्रोता की स्थिति में था। लेकिन यह ग्रंथ इनकार करने वाले को संबोधित करता है, और आस्तिक श्रोता की स्थिति में है। इसका अध्ययन करते समय इस पर विचार किया जाना चाहिए।

दुर्भाग्य से, एक महत्वपूर्ण कारण से, यह पत्र बहुत जल्दी लिखा गया और प्रथम ड्राफ्ट में ही रह गया। इसलिए, इसमें अभिव्यक्ति की कुछ त्रुटियाँ अवश्य होंगी, जो मेरी वजह से हैं। मैं अपने भाइयों से अनुरोध करता हूँ कि वे इसे सहिष्णुता से देखें, और यदि वे सक्षम हों तो इसे सुधारें, और मेरी क्षमा के लिए प्रार्थना करें।

> शांति उन लोगों पर हो जो सच्चे मार्गदर्शन का पालन करते हैं।
> जो लोग अपनी सनक और भ्रम का अनुसरण करते हैं, उन्हें वह मिले जिसके वे हकदार हैं।
>
> तू महिमावान है। हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उस ज्ञान के जो तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> ऐ अल्लाह, उस पर रहमत और सलामती अता फरमा जिसे तूने तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है, और उसके घरवालों और साथियों पर। आमीन।

अनुक्रमणिका